Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र
terapanthtimes.com

> **आत्मसाक्षी**
> आपरा किरतब आपने सूझें,
> मन छांनी चोरी नहीं कांइ।
>
> स्वयं का किया हुआ स्वयं को दिखता है, मन से छिपी कोई चोरी नहीं होती।
> –आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली ● वर्ष 26 ● अंक 31 ● 05 मई - 11 मई, 2025 प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 03-05-2025 ● पेज 16 ₹ 10 रुपये

एकादशम् अधिशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण
जन्मोत्सव, पट्टोत्सव एवं दीक्षा दिवस के पावन अवसर पर

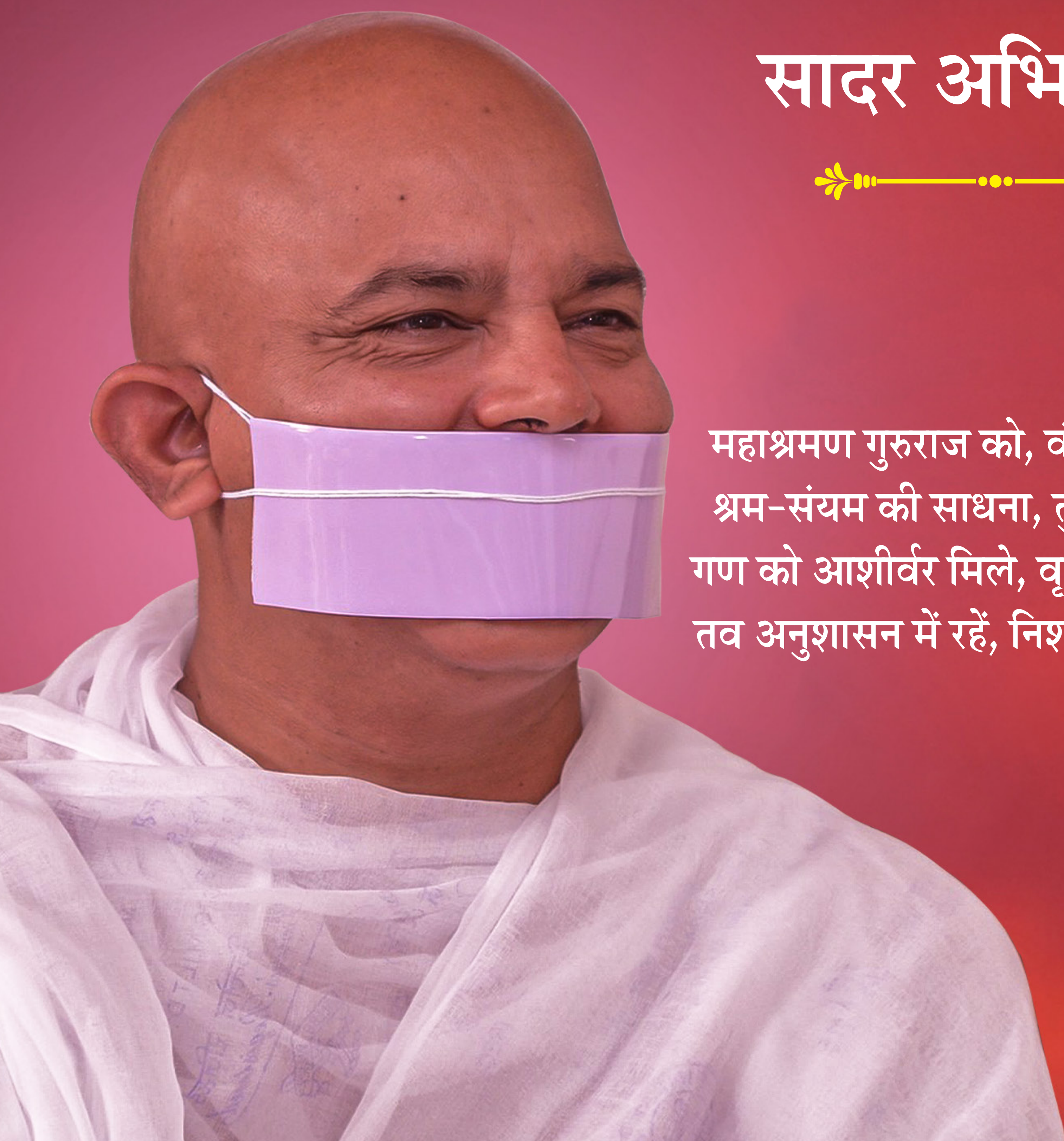

सादर अभिवंदना

महाश्रमण गुरुराज को, वंदन बार हजार,
श्रम-संयम की साधना, तुझमें अपरंपार।
गण को आशीर्वर मिले, वृद्धि हो चिहुं ओर,
तव अनुशासन में रहें, निशा हो चाहे भोर।।

श्रद्धाप्रणत : अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

स्वाध्याय, सेवा और तप से आत्मा को बनाएं शुद्ध : आचार्यश्री महाश्रमण

अक्षय तृतीया पर 450 से अधिक तपस्वियों ने किया गुरु सन्निधि में वर्षीतप संपन्न

डीसा।
30 अप्रैल, 2025

वैशाख शुक्ला तृतीया अक्षय तृतीया।

भगवान ऋषभ के साधिक एक वर्षीय तपस्या के पारणे का अवसर। भगवान ऋषभ के वर्षीतप की तपस्या का आंशिक अनुकरण करते हुए वर्तमान में भी अनेक साधु-साध्वियां एवं श्रावक-श्राविका वर्षीतप की आराधना करते हैं। वर्षीतप की पूर्णाहुति - पारणा करने तपस्वी गुरु चरणों या चारित्रात्माओं के सान्निध्य में पहुंचते हैं।

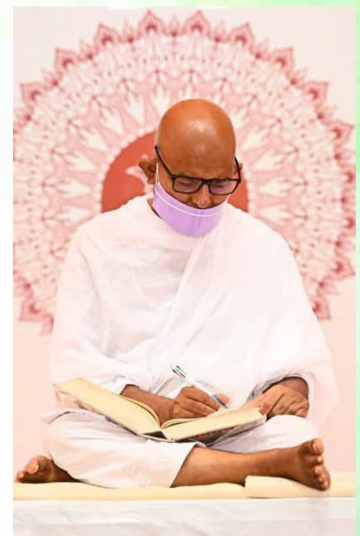

भगवान ऋषभ के प्रतिनिधि, महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में इस वर्ष का वर्षीतप पारणे का आयोजन गुजरात के डीसा नगर में आयोजित हुआ। लगभग 450 वर्षीतप तपस्वियों ने गुरु चरणों में पहुंचकर अपने आराध्य को ईक्षुरस का दान देकर धन्यता का अनुभव किया।

श्री महाराणा प्रताप स्कूल परिसर में बने 'अक्षय समवसरण' में आचार्यवर के द्वारा नमस्कार महामंत्र के सम्मुचारण से कार्यक्रम का आगाज हुआ। महातपस्वी आचार्यप्रवर ने अमृतरस का रसास्वादन कराते हुए फरमाया कि 'धम्मो मंगल मुक्किट्ठं' - दसवैकालिक आगम का यह प्रथम अध्ययन का प्रथम श्लोक है। इसमें धर्म की महिमा बतायी गयी है कि जो व्यक्ति धर्म में रत रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं। धर्म से आत्मा शुद्ध बनती है। धर्म के तीन प्रकार बताये गये हैं - अहिंसा, संयम और तप।

एक समय के पश्चात लें यथोचित मोड़

आज का अक्षय तृतीया का समारोह मुख्यतः तप से जुड़ा, तप की संपन्नता का दिन है। परम पावन प्रातः स्मरणीय भगवान ऋषभ के वर्षीतप का पारणा आज के दिन ही हुआ था। भगवान ऋषभ इस भरत क्षेत्र के वर्तमान अवसर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर, प्रथम केवली, प्रथम धर्म चक्रवर्ती हुए थे। भगवान ऋषभ के जीवन पर दृष्टिपात किया जाए तो उनका जीवन अनेक आयामों में विभक्त हो सकता है। उन्होंने गृहस्थ जीवन जीया, अनेक कलाएं सिखायीं, प्रथम राजा बने, राजनीति से प्रशासन संभाला। राजा का दायित्व होता है - सज्जनों की रक्षा करना, असज्जनों को दण्डित करना और प्रजा का भरण-पोषण करना।

राज्य त्याग कर अपने पुत्रों को व्यवस्था दी। भगवान ऋषभ ने चैत्र कृष्णा नवमी को साधुपन स्वीकार किया था। यहाँ से उनका अध्यात्म का आयाम प्रारम्भ होता है। व्यक्ति को एक समय के पश्चात यथोचित मोड़ लेना चाहिये। यह प्रेरणा हम भगवान ऋषभ के जीवन से ले सकते हैं। भगवान ऋषभ ने वर्षीतप किया नहीं था। उनके तो वर्षीतप हो गया था, कारण कि लोगों को उस समय सुपात्र दान देने का ज्ञान नहीं था। आज का दिन उनके वर्षीतप की सम्पन्नता का दिन है। हमारे धर्म संघ के कितने साधु-साध्वियां, समणियां और श्रावक-श्राविकाएं वर्षीतप की आराधना करने वाले हैं। वर्षीतप एक सुन्दर तपस्या का निमित्त है।

तीन चीजें हैं - स्वाध्याय, सेवा और तपस्या। हमारे धर्म संघ में बहुश्रुत परिषद है। मुख्यमुनि इसके वर्तमान संयोजक हैं। इसमें सात सदस्य हैं - साध्वी प्रमुखाजी, साध्वीवर्याजी, मुनि दिनेशकुमारजी, बाहर में मुनिश्री उदितकुमारजी स्वामी, शासन गौरव साध्वी राजीमतीजी और शासन गौरव साध्वी कनकश्रीजी 'लाडनूं'। हमारे धर्म संघ में श्रुताराधना चलती है। आगम सम्पादन व अध्ययन करना और कराने का कार्य होता है। स्वाध्याय, सेवा और तप का अपना-अपना महत्व है। तप करने वाले साधुवाद के पात्र हैं।

पूज्यवर ने वर्षीतप करने के दौरान आवश्यक साधना रूप में वर्षीतप के नियमों को समझाया कि वर्षीतप करने वालों को रात्रि चौविहार तो अवश्य करना है।

> वर्षीतप करें तो चौविहार करें। उपवास में तो रात्रि में चौविहार होता ही है। पारणे के दिन भी चौविहार करें। ऐसा नहीं की रात को तिविहार कर लें, तिविहार की बात समाप्त की जा रही है, पारणे में भी रात का चौविहार करना। अर्थात् पूरे ही काल में रात का चौविहार हो गया। चौविहार करना नियम है, यह बात ध्यान में रखें।
>
> -आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्यवर ने नए सिरे से वर्षीतप स्वीकार करने वालों को प्रत्याख्यान करवाये। पूर्व में कृत वर्षीतप में कोई अतिचार-दोष लगा हो तो उसके प्रायश्चित के रूप में तेरह सामायिक की आलोचना प्रदान करवाई। पूज्यप्रवर ने आगे फरमाया - आप सभी वर्षीतप न भी कर सकें पर जीवन में धार्मिक साधना चलती रहे। धर्म संघ में साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाएं रत्नों की माला हैं। जितना त्याग-व्रत है, उस दृष्टि से श्रावक-श्राविकाएं रत्नों की माला हैं।

दीक्षा प्रदाता की स्मृति

आज ही के दिन छह वर्ष पूर्व जयपुर में मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी 'लाडनूं' का महाप्रयाण हो गया था। उनके पास अच्छा ज्ञान था। उन्होंने धर्म संघ की बहुत सेवा की थी। चार मुमुक्षुओं को दीक्षा प्रदान करवायी थी, उनमें से मैं भी एक हूं।

श्रावक समाज को निर्देश

तेरापंथ श्रावक समाज है। आपके गृहस्थ कार्य चलते हैं पर यह ध्यान रहे कि आपके पारिवारिक प्रसंगों में शराब का उपयोग न हो। पूज्य प्रवर ने विगत में हुई गलती के लिए परिवारों के मुखिया और संभागी लोगों को क्रमशः नमस्कार महामंत्र के जप के साथ 7 सामायिक और 2 सामायिक करने का इंगित प्रदान करवाया।

(शेष पेज 14 पर)

ज्ञान के प्रयोग से करें बुद्धि का सदुपयोग : आचार्यश्री महाश्रमण

वाव।
21 अप्रैल, 2025

वाव के वर्धमान समवसरण में श्रावक समाज को पावन अमृत देशना प्रदान करते हुए अष्टगणी संपदा से सुशोभित पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि हमारे जीवन में बुद्धि, शुद्धि और शक्ति — इन तीनों का विशेष महत्व है। शक्ति का गोपन नहीं करना चाहिए।

व्यक्ति के पास यदि बुद्धि है और उसका सदुपयोग होता है तो जीवन में उत्तम कार्य हो सकते हैं। बुद्धि से समस्याओं का समाधान खोजा जा सकता है। जैन दर्शन में कर्मवाद का सिद्धांत है, जिसमें ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय कर्म ज्ञान और दर्शन से जुड़े हुए हैं। ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से विशेष बुद्धि की उपलब्धि होती है। बुद्धि मिलना स्वयं में एक विशेष उपलब्धि है, जिसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। बुद्धि का सदुपयोग कर अच्छे ग्रंथों का अध्ययन करें, साहित्य सृजन करें, और

कल्याणकारी शिक्षा दें।

आचार्यश्री भिक्षु का प्रसिद्ध सूक्त है -
'बुद्धि तिणा री जाणीये,
जो सेवै जिन धर्म।
अवर बुद्धि किण काम री,
जो पड़िया बांधे कर्म।'

मन, वचन, काय और भावों की शुद्धि पर बल देते हुए आचार्यश्री ने कहा — जो दूसरों का अनिष्ट सोचता है, वह अपना भी अनिष्ट कर सकता है। जो दूसरों का भला सोचता है, वह स्वयं का भी भला करता है। वचन से पवित्र वाणी बोलें, उच्चारण में शुद्धता हो और शरीर की बाह्य तथा आंतरिक शुद्धि भी बनी रहे।

गृहस्थों में धनबल और शारीरिक बल होता है। पुण्य के योग से शरीर सक्षम बना रहता है। शक्ति का दुरुपयोग न करते हुए सेवा में उसका सदुपयोग करें। हमें कैंची नहीं, सुई बनना चाहिए — जोड़ने का कार्य करना चाहिए। ज्ञान न हो तो मौन रहना चाहिए। शक्ति है तो दूसरों की सेवा करें, साधर्मिक भक्ति करें। शारीरिक और बौद्धिक सेवा दोनों का महत्व है। लीडिंग का कार्य भी तपस्या है और निर्व्याज सेवा संघ सेवा का आवश्यक अंग है। बड़ों को चाहिए कि वे युवाओं को अवसर दें ताकि समाज में नेतृत्व क्षमता विकसित हो। टीम भावना से कार्य करने पर योजनाएं सफल हो सकती हैं। बुद्धि, शुद्धि और शक्ति का सदुपयोग धार्मिक और आध्यात्मिक कार्यों में होना चाहिए। अगली पीढ़ी को भी इसके लिए तैयार करना चाहिए।

दीक्षा दिवस पर मंगल आशीष

पूज्यवर ने बताया कि आज वैशाख कृष्ण अष्टमी है। आज से पचास वर्ष पूर्व जयपुर में गुरुदेव तुलसी के करकमलों से साध्वी सुरेखा जी 'चाड़वास' और साध्वी उज्ज्वलरेखा जी 'सरदारशहर' को दीक्षा मिली थी। आज उनका 51वां दीक्षा दिवस है। पूज्यवर ने दोनों साध्वियों के उत्तम स्वास्थ्य, साधना और संघ सेवा के लिए मंगलकामना प्रकट की तथा मुमुक्षुओं को तैयार करने का आह्वान भी किया।

मुख्यमुनि श्री महावीरकुमार जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि दुष्प्रवृत्तियाँ व्यक्ति का अनर्थ कर देती हैं। गुस्से से केवल दूसरों को ही नहीं, स्वयं को भी क्षति पहुँचती है और कर्मबंधन होता है। इसलिए मन, वचन और काय को सद्प्रवृत्ति में लगाना चाहिए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि हम आचार्यश्री महाश्रमणजी की अनुशासना में साधना कर रहे हैं। जब पूज्यवर अतीत की घटनाएँ सुनाते हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है कि मानो पूरा इतिहास जीवंत हो उठा हो। आचार्यवर का जीवन जोड़ने का प्रतीक है — कितने राज्यों की यात्राएँ, कितने संप्रदायों से संपर्क और आत्मीयता का विस्तार आपके जीवन का हिस्सा रहा है।

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी ने 'वह संत पुरुष कहलाता है' गीत का सुमधुर संगान किया। कार्यक्रम में वाव पथक व्यवस्था समिति संयोजक विनीत संघवी ने पूज्यवर की अभिवंदना करते हुए अपनी भावना व्यक्त की। उधमचंद मोतीचंद संघवी परिवार ने गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

निरंतरता और श्रद्धा के साथ हो साधना का अभ्यास : आचार्यश्री महाश्रमण

कापरा।
26 अप्रैल, 2025

मैत्री के महासागर, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ लगभग 14 किमी का विहार कर कापरा गांव में स्थित श्री मोंघी अमृत सुन्दर तीर्थ पधारे। पावन प्रेरणा-पाथेय प्रदान करते हुए परम पूज्य ने फरमाया कि जीवन में योग-साधना का अत्यंत महत्व है। ध्यान भी योग-साधना का एक अंग है। पतंजलि के अष्टांग योग में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि का उल्लेख मिलता है। इन आठ अंगों में काफी व्यापकता का दर्शन किया जा सकता है। अणुव्रत में भी अष्टांग की चर्चा की गई है।

हमारे यहाँ प्रेक्षाध्यान पद्धति प्रचलित है, और वर्तमान में 'प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष' भी चल रहा है। ध्यान की अनेक पद्धतियाँ हैं। कोई भी प्रयोग करना है तो लम्बे समय तक निरंतर करने का प्रयास होना चाहिए। सततता और श्रद्धा के साथ साधना का अभ्यास हो।

जैन दृष्टिकोण से मोक्ष का उपाय योग ही है—सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र मोक्ष के मार्ग हैं। धर्म की वे सारी प्रवृत्तियाँ, जो मोक्ष से जोड़ती हैं, योग ही हैं। योग-साधना करने वाला व्यक्ति योगी कहलाता है। साधु तो स्वाभाविक रूप से योगी होते हैं। खाली पेट चलना एक उत्तम व्यायाम भी है और साधना भी। विहार के दौरान यदि चित्त केवल चलने में केन्द्रित हो जाए तो चलना भी एक साधना हो सकती है। ईर्या समिति भी योग साधना का ही एक अंग है। चलने में एकाग्रता हो जाए तो कितने ही पापों से बचाव हो सकता है। चलते समय बातों में लग जाना गमन योग में बाधा की बात हो सकती है। चलने में ईर्या समिति का ध्यान और ट्रैफिक नियमों का भी ध्यान रखने का प्रयास करना चाहिए। हमारे यहाँ प्रेक्षाध्यान साधना-पद्धति में विविध प्रयोग होते हैं। ध्यान हमारी साधना का एक प्रमुख तत्व है और यह भाव-क्रिया के साथ जुड़ा हुआ है। (शेष पेज 14 पर)

काम व भोग रूपी विष होते हैं आध्यात्मिकता में बाधक : आचार्यश्री महाश्रमण

रामपुरा।
27 अप्रैल, 2025

अणुव्रत अनुशास्ता, आचार्यश्री महाश्रमणजी लगभग 12 किलोमीटर का विहार कर रामपुरा पगार केन्द्रशाला प्रांगण में पधारे। अमृतमयी देशना प्रदान करते हुए शान्तिदूत ने फरमाया कि इस संसार में भौतिकता भी है और आध्यात्मिकता भी। भौतिकता पुद्गल से जुड़ी हुई है, जबकि आध्यात्मिकता आत्मा से संबंधित है।

इस जगत में आत्मा नाम का तत्त्व भी है और पुद्गल नाम का तत्त्व भी। सृष्टि में पुद्गल जैसे मूर्त पदार्थ भी हैं और अमूर्त द्रव्य भी। छह द्रव्यों में से पुद्गलास्तिकाय को छोड़कर शेष पांच द्रव्य अमूर्त होते हैं। धर्मास्तिकाय जीव की गति में सहायक है, जबकि अधर्मास्तिकाय जीव की स्थिति में सहायक होता है। आकाशास्तिकाय तो विराट और अनन्त है। लोक-अलोक सर्वत्र व्याप्त हैं, जिनका कोई पारावार नहीं है। धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय केवल लोकाकाश में ही पाए जाते हैं।

पुद्गलास्तिकाय द्रव्य मूर्त होता है और यह भी केवल लोकाकाश में ही विद्यमान होता है। समस्त जीव भी केवल

बीसवां बोल - षड् द्रव्यों का ज्ञान

1. धर्मास्तिकाय
2. अधर्मास्तिकाय
3. आकाशास्तिकाय
4. काल
5. पुद्गलास्तिकाय
6. जीवास्तिकाय

लोकाकाश में ही रहते हैं। भौतिकता का मूल तत्त्व पुद्गल ही है, जबकि अध्यात्म का तत्त्व अमूर्त होता है। भौतिक जगत में पाँच विषय होते हैं—शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श, जो हमारी पाँच ज्ञानेन्द्रियों से संबंधित हैं। इन्हीं ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से भौतिक विषयों का ज्ञान और ग्रहण संभव है।

परंतु यही शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श पाँच विषय शल्य स्वरूप हैं—ये विष के समान हैं, जैसे कोई विषैला सर्प। इनकी कामना करने वाला व्यक्ति दुर्गति को प्राप्त कर सकता है। काम और भोग शल्य की तरह पीड़ा देने वाले बन सकते हैं। यदि उनमें आसक्ति जुड़ जाए, तो ये आत्मा के लिए विष के समान बन जाते हैं और आत्मिक हानि पहुंचाते हैं। यदि हम भौतिकता का उपयोग आध्यात्मिकता के हित में करें, तो वही भौतिकता हमारी साधना में सहायक बन जाती है।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
05 मई - 11 मई, 2025

फिजिकल मिशन एंपावरमेंट की तृतीय कार्यशाला का सफल आयोजन

राजाजीनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद, राजाजीनगर द्वारा तेरापंथ टास्क फोर्स की 'हर सिटी TTF' पहल के अंतर्गत फिजिकल मिशन एंपावरमेंट की तृतीय कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ सभा भवन, राजाजीनगर में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुई, तत्पश्चात भिक्षु श्रद्धा स्वर टीम द्वारा विजय गीत प्रस्तुत किया गया। तेयुप के संस्थापक अध्यक्ष सुनील बाफना ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया।

कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरडिया ने उपस्थित सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और कहा कि जब तक हमें स्वयं को आवश्यक जानकारी नहीं होगी, तब तक हम दूसरों की सहायता प्रभावी रूप से नहीं कर सकते। यह कार्यशाला इसी दिशा में एक सशक्त पहल है। तेरापंथ सभा, राजाजीनगर के अध्यक्ष अशोक चौधरी ने अपने वक्तव्य में कहा कि किसी भी आपात स्थिति में यदि हम प्राथमिक चिकित्सा का ज्ञान रखते हों, तो हम एक जीवन रक्षक की भूमिका निभा सकते हैं। कार्यशाला के मुख्य प्रशिक्षक, कोलकाता से पधारे जयकुमार चोरड़िया (TTF ट्रेनर) ने प्रतिभागियों को मेडिकल इमरजेंसी की विभिन्न स्थितियों जैसे जलने, गहरी चोट, रक्तस्राव, नाक से खून बहना, हड्डी टूटना आदि में प्राथमिक उपचार करने के बारे में व्यावहारिक जानकारी दी। उन्होंने CPR (Cardiopulmonary Resuscitation) का डेमो देते हुए बताया कि हार्ट अटैक की स्थिति में छाती पर किस स्थान पर और कितनी बार पंपिंग करनी चाहिए तथा कृत्रिम साँस कैसे दी जाए। इसके अलावा, समय-समय पर रक्तदान की महत्ता और आपातकाल में घरेलू संसाधनों से स्ट्रेचर बनाने की विधि भी सिखाई गई।

इससे पूर्व परिषद द्वारा दो कार्यशालाएं – चन्नपटना के बालू पब्लिक स्कूल और चिकपेट के भेरू गारमेंट्स में आयोजित की जा चुकी हैं। यह तृतीय कार्यशाला इस श्रृंखला की एक और सफल कड़ी सिद्ध हुई। कार्यक्रम के अंत में TTF ट्रेनर जयकुमार चोरड़िया का अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी, संस्थापक अध्यक्ष सुनील बाफना, परामर्शक चंद्रेश मांडोत, तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरडिया सहित तेयुप परिवार एवं श्रावक समाज के अनेक सदस्य उपस्थित रहे।

मंच संचालन एवं आभार प्रदर्शन श्री जयंतीलाल गांधी द्वारा किया गया।

तनाव प्रबंधन कार्यशाला का आयोजन

सिकंदराबाद।

हैबिटेट एलिट परिसर में साध्वी डॉक्टर गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में "कैसे हो तनाव मुक्त जीवन" विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नवकार मंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुआ। सिकंदराबाद सभा के एडवाइजरी सदस्य विमल पुगलिया ने सभी आगंतुकों का स्वागत करते हुए स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। साध्वी डॉ. गवेषणाश्रीजी ने अत्यंत सहज एवं सारगर्भित उदाहरणों के माध्यम से समझाया कि व्यक्ति को अपने सोचने के तरीके में सकारात्मक परिवर्तन लाना चाहिए। हमारे भीतर जो ऊर्जा है, उसका उपयोग हमें सकारात्मक चिंतन की दिशा में करना चाहिए। उन्होंने बताया कि यदि हम तनाव में रहते हैं तो मस्तिष्क की कोशिकाएं प्रभावित होती हैं और हमारी चिंतन शक्ति कमजोर पड़ जाती है। हमें अपनी सकारात्मक सोच के माध्यम से आत्मिक विकास के पुष्प खिलाने चाहिए। उन्होंने जीवन में Be Happy की प्रेरणा देते हुए समझाया कि परिवार और समाज को साथ लेकर चलना, सभी को प्रसन्न रखते हुए आगे बढ़ना आवश्यक है। स्व-प्रबंधन के लिए जरूरी है कि हम स्वयं को व्यवस्थित करें, अपने ऊपर अनुशासन रखें और अपने भाव, विचार एवं इंद्रियों को संयमित करें। तभी हम एक अनुशासित जीवन जी सकते हैं।

कार्यशाला में प्रतिभागियों को 5 मिनट के ध्यान अभ्यास के माध्यम से तनाव निवारण का व्यावहारिक अनुभव भी करवाया गया। साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा कि हमारे भीतर ज्ञान, दर्शन और शक्ति का अनंत भंडार है। उन्होंने 'स्त्री' शब्द के अर्थ को रोचक ढंग से समझाया। साध्वी दक्षप्रभाजी द्वारा एक सुमधुर गीतिका का संगान किया गया।

इस आयोजन में सिकंदराबाद सभा के अध्यक्ष सुशील संचेती, मंत्री हेमंत संचेती एवं समस्त पदाधिकारी मंडल, अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश एच. भंडारी, मंत्री रीता सुराणा एवं अनेक श्रावक-श्राविकाओं की गरिमामयी उपस्थिति रही। अंत में TPF के राष्ट्रीय ऑर्गनाइजेशनल डेवलपमेंट चेयरमैन ऋषभ दुगड़ ने सभी का आभार प्रकट करते हुए कार्यशाला का समापन किया।

तेरह दिवसीय संघ प्रभावक प्रवास संपन्न

बुरहानपुर।

शांति दूत आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि अर्हत कुमार जी का 13 दिवसीय मंगलमय प्रवास बुरहानपुर में संपन्न हुआ। प्रवास का शुभारंभ हिंदी नव वर्ष के अवसर पर मंगल पाठ के साथ हुआ। इसके साथ ही नवरात्रि के अनुष्ठान में तेरापंथ समाज ने विशेष उत्साह, श्रद्धा एवं तन्मयता के साथ भाग लिया। इस प्रवास के दौरान स्थानकवासी समाज ने भी मुनिश्री के दो विशेष कार्यक्रम स्थानक भवन में आयोजित करवाए। इन कार्यक्रमों के विषय थे - हैप्पी कपल, खुशी डबल एवं घर को स्वर्ग कैसे बनाएं? भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस के अवसर पर मुनिश्री ने तेरापंथ धर्म संघ के इतिहास और आचार्य भिक्षु के जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर भिक्षु गीतों का भावपूर्ण संगान भी किया गया। सकल जैन समाज की उपस्थिति में आनंद संचेती भवन में महावीर जयंती का कार्यक्रम भी मुनिश्री के सान्निध्य में आयोजित हुआ।

साध्वियों का आध्यात्मिक मिलन समारोह

विजयनगर, बैंगलोर।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी पावनप्रभा जी, साध्वी संयमलता जी एवं साध्वी पुण्ययशाजी का मिलन आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, विजयनगर के परिसर में हुआ। तीनों साध्वियों के समूह मिलन को देखकर गंगा, यमुना और सरस्वती स्वरूप त्रिवेणी संगम का सा आभास हुआ। साध्वियों ने बहुत ही उत्साह के साथ आगंतुक साध्वियों का स्वागत किया।

ज्ञातव्य है कि विजयनगर में कमला देवी बाबेल का आजीवन संथारा तप उच्च भावों के साथ प्रवर्धमान है। सभी साध्वियां संथारा साधिका कमलाबाई को दर्शन देने एवं उनके संथारा साधना में सहयोग हेतु विजयनगर पधारी हैं। मांडोत परिवार के निवास स्थान 'मीठा जीवन' में आयोजित स्वागत समारोह में मेजबान साध्वी संयमलता जी आदि साध्वीवृंद ने सुंदर गीत के द्वारा स्वागत की परंपरा निभाई और सभी साध्वियों से अधिक से अधिक समय तक विजयनगर में विराजने का निवेदन किया।

साध्वी मनीषाप्रभा जी एवं साध्वी रौनकप्रभा जी ने बहुत ही रोचक कार्यक्रम के द्वारा सभी साध्वियों का परिचय दिया। साध्वी पावनप्रभा जी एवं साध्वी पुण्ययशा जी ने भी अभिभूत होकर अपने विचार रखे एवं श्रावक समाज को अधिक से अधिक धर्माराधना करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का सुंदर संचालन साध्वी मार्दवयशा जी ने किया।

विजयनगर सभा अध्यक्ष मंगल कोचर ने साध्वी वृंद एवं श्रावक समाज का स्वागत किया एवं साध्वियों से आगामी आचार्य महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस तक विजयनगर में विराजने का निवेदन किया। अभातेमम से वीणा बैद और टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत ने भी अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल सदस्यों द्वारा स्वागत गीतिका का संगान किया गया।

संथारा साधिका कमलाबाई के परिवार से प्रियल बाबेल ने सभी साध्वियों के प्रति साधिका को आध्यात्मिक संबल प्रदान करने एवं दर्शन देने के लिए कृतज्ञता ज्ञापित की। महिला मंडल उपाध्यक्ष बरखा पुगलिया ने साध्वी विश्रुतविभा जी द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन किया।

कार्यक्रम में अभातेयुप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने अपने निवास स्थान पर सभी का स्वागत एवं आभार ज्ञापित किया। टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत, अणुव्रत विश्व भारती के उपाध्यक्ष कैलाश बोराणा, संगठन मंत्री राजेश चावत, वृहद बेंगलुरु के विभिन्न क्षेत्रों की अनेकों संस्थाओं के गणमान्य पदाधिकारी और श्रावक समुदाय की अच्छी संख्या में उपस्थिति रही।

प्रसन्नता से जी सकते हैं टेन्शन फ्री लाइफ

किलपाक, चेन्नई।

स्थानीय जैन मंदिर के प्रांगण में मुनि दीपकुमारजी के सान्निध्य में 'कैसे जीएं टेंशन फ्री लाइफ' विषयक विशेष प्रवचन का आयोजन श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, किलपाक, चेन्नई द्वारा किया गया।

नमस्कार महामंत्र के समुच्चारण से शुभारंभ हुए इस कार्यक्रम में मुनिश्री ने कहा कि आज चारों ओर तनाव के स्वर सुनाई दे रहे हैं।

तनाव जीवन को खोखला बनाने वाला है। तनावग्रस्त व्यक्ति नारकीय जीवन जीता है। समस्याएँ सभी के सामने आती हैं, परंतु जो हर स्थिति में मस्त रहना जानता है, वह समाधान खोज लेता है। जो सदैव प्रसन्न रहना जानता है, वह तनाव पर विजय प्राप्त कर लेता है।

तनावमुक्त जीवन के लिए जीवनशैली संतुलित होनी चाहिए। प्रवृत्ति और निवृत्ति में संतुलन आवश्यक है। जितना अधिक सकारात्मक सोचेंगे, उतना ही तनावमुक्त जीवन जी सकेंगे। प्रतिस्पर्धा से बचें, प्रमोद भावना का विकास करें। मुनि काव्यकुमारजी ने तनावमुक्त जीवन के सूत्र बताए।

अक्षय तृतीया पर विशेष

याद प्रभु की आने लगी

● साध्वी संवरविभा ●

तप की उजली राहों में याद प्रभु की आने लगी।
हो वर्षीतप के पारणे में।।

1. नाभि सुत है अवतारी, नाम में शक्ति है भारी,
तुम पर जाएं बलिहारी, दुनिया तेरी है प्यारी।
आशीष प्रभु का पाने को-2, याद प्रभु।।

2. वर्षीतप के ओ राही, तप की बज रही शहनाई,
हीरे- पन्ने थाल सजें, कन्या की मनुहार हुई।
तेरह घड़ी की अन्तराय में-2, याद प्रभु।।

3. अक्षय तृतीया है आई, धन्य धरा है मुस्काई,
श्रेयांस बड़ा था सौभागी, इक्षुरस की धार बही।
तीज की सुनहली प्रातः में-2, याद प्रभु।।

4. घर- घर में खुशियां छाई, प्रभु की जय-जय कार हुई,
आया जो भी शरण तेरी, नैय्या उसकी पार हुई।
गुंजित मृदु झंकार में अहोदानं की ध्वनि हुई.।।

लय - याद पिया की

श्रद्धा और उल्लास से मनाया विश्व नवकार महामंत्र दिवस

अहमदगढ़ (पंजाब)।

तेरापंथ भवन अहमदगढ़ में विश्व नवकार महामंत्र दिवस का आयोजन साध्वी कनकरेखा जी के सान्निध्य में श्रद्धा, भक्ति और आध्यात्मिक ऊर्जा के वातावरण में सम्पन्न हुआ। श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए नमस्कार महामंत्र का सामूहिक जाप किया। साध्वीश्री की प्रेरणा से बड़ी संख्या में भाई-बहनों ने दो सामायिक कर महामंत्र की शक्ति का अनुभव किया और नई ऊर्जा, नई ताजगी एवं आंतरिक शांति का अहसास किया। साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र के पाँचों पदों का भावपूर्ण विवेचन करते हुए इसकी आध्यात्मिक महत्ता को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि यह महामंत्र आत्मा को शुद्धि और उन्नयन की दिशा में प्रेरित करता है। इस अवसर पर कई श्रद्धालुओं ने प्रतिदिन माला फेरने का संकल्प लिया।

साध्वीश्री जी ने कहा कि आज पूरे विश्व में एक समय पर महामंत्र का सामूहिक जप हुआ, जो आत्मिक उन्नति का एक अद्भुत क्षण था।

संक्षिप्त खबर

संतों के पदार्पण से मिली अवसर का लाभ उठाने की प्रेरणा

नोखा। डॉ. मुनि अमृतकुमार ने नोखा पदार्पण के अवसर पर तेरापंथ भवन में कहा - सत्य, अहिंसा, अनेकांत, तीर्थंकर द्वारा भाषित धर्म सर्वव्यापी है। व्यक्ति आलस्य, प्रमाद त्याग कर धर्म के मर्म को समझें, तभी मानव जीवन सार्थक होगा। मुनि उपशमकुमार जी ने नोखा की धर्म नगरी को अनोखा बताया। श्रावकों से समय का सदुपयोग कर धार्मिकता अपनाने पर बल दिया, अवसर का लाभ उठाने की प्रेरणा दी। कवि इन्द्रचन्द बैद, उपासक अनुराग बैद, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष सुमन मरोठी, मनोज घीया, तेयुप से निर्मल चोपड़ा ने मुनिश्री के स्वागत में विचार व्यक्त किए। संचालन तेयुप मंत्री सुरेश बोथरा ने किया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

नामकरण संस्कार

साउथ कोलकाता। राजलदेसर निवासी - साउथ कोलकाता प्रवासी रमेश-सुमन चंडालिया की पौत्री एवं प्रतीक-दिविशा चंडालिया की पुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक महावीर दुगड़ द्वारा पूरे मंत्रोच्चार के साथ सम्पादित किया गया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

नागपुर। पवन जैन के नूतन प्रतिष्ठान ZEE MALL का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक आनंदमल सेठिया, जतन मालू, महेंद्र आंचलिया एवं आदित्य कोठारी ने विधि विधान द्वारा सम्पादित करवाया।

प्रवास की स्मृतियों के साथ हुआ मंगल भावना समारोह का आयोजन

दिल्ली।

आचार्य महाप्रज्ञ भवन, महरौली में तेरापंथ सभा दिल्ली द्वारा मंगल भावना कार्यक्रम को संबोधित करते हुए 'शासनश्री' साध्वी सुव्रतांजी ने कहा — मैं आचार्यश्री महाश्रमण जी के निर्देशानुसार 'शासनश्री' साध्वी रतनश्री जी के साथ चातुर्मास करने के लिए तेरापंथ भवन, महरौली में आई। यह स्थान शुद्ध और पवित्र है, क्योंकि यहां आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ एवं आचार्य श्री महाश्रमण जी के चातुर्मास संपन्न हो चुके हैं। यहां शासन माता का वात्सल्य पीठ भी स्थित है। शहर की हलचल से दूर यह स्थान शांत वातावरण से युक्त है।

हमने सोचा यहाँ चातुर्मास करने से साध्वी श्री जी स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करेंगी। परंतु साध्वी रतनश्री जी के मानस में अनशन करने की भावना आकार लेने लगी। महरौली में प्रवेश के बाद उनकी शारीरिक अस्वस्थता बढ़ गई। कुछ दिनों तक चिकित्सा चली, किंतु अंततः उन्होंने यावज्जीवन अनशन करने का दृढ़ संकल्प ले लिया। शासन माता के अंतिम प्रवास के कक्ष में आसन लगाकर सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में आचार्यप्रवर महाश्रमण जी की अनुज्ञा प्राप्त कर उन्होंने संथारा स्वीकार किया।

इस दौरान तेरापंथ सभा, तेरापंथ युवक परिषद, दक्षिण दिल्ली महिला मंडल, अध्यात्म साधना केंद्र एवं दिल्ली तेरापंथ भवन के सदस्यों ने तन-मन से सेवा कर संपूर्ण व्यवस्था को सुचारू रूप से संभाला। साध्वीश्री के संथारा की संपन्नता के पश्चात कई महत्वपूर्ण आयोजन संपन्न हुए, जैसे — अमृतवाणी उद्घाटन, योगक्षेम भवन उद्घाटन, 'आंगन' का उद्घाटन, शासन माता स्वर्गारोहण की स्मृति में आयोजन, तथा शासन माता वात्सल्य पीठ पर शिविरों का सुचारु आयोजन आदि। अब हम महरौली से प्रस्थान कर पीतमपुरा चातुर्मास के लिए जा रहे हैं। आपने हमारे प्रवास में जो भी पाया है, उसे सुरक्षित रखें और आने वाले साधु-साध्वियों की सेवा श्रद्धा से करें। 'शासनश्री' साध्वी सुमन प्रभा जी, साध्वी कार्तिक प्रभा जी एवं साध्वी चिन्तन प्रभा जी ने सुमधुर गीतों के माध्यम से अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। इस अवसर पर तेरापंथ महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़, दिल्ली तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, मंत्री प्रमोद घोड़ावत, दक्षिण दिल्ली सभा की अध्यक्ष सुशीला पटावरी, मंत्री यश बरमेचा, महरौली तेरापंथ भवन के निर्देशक सुशील कुहाड़, कल्याण परिषद के संयोजक एवं अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी के.सी. जैन, दक्षिण दिल्ली महिला मंडल की अध्यक्षा शिल्पा जैन, रोहिणी तेरापंथ सभा के मंत्री राजेन्द्र सिंघी, दिल्ली सभा की अणुव्रत प्रभारी एवं कवयित्री कल्पना सेठिया, अणुव्रत समिति के सहमंत्री मनोज खटेड़, रश्मि नौलखा, योग प्रशिक्षक निलीमा, हरिकेश एवं महक आदि ने साध्वीश्री जी के प्रति मंगल भावनाएं प्रकट कीं। महरौली तेरापंथ भवन के समस्त स्टाफ तथा दक्षिण दिल्ली तेरापंथ सभा एवं महिला मंडल के सदस्यों ने विदाई गीत का संगान किया। संचालन महरौली तेरापंथ भवन के व्यवस्थापक संदीप डूंगरवाल ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन मुकेश सेठिया ने किया।

CPS कार्यशाला का हुआ शुभारम्भ

साउथ कोलकाता।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद्, साउथ कोलकाता द्वारा आयोजित 'कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग' प्रशिक्षण के प्रथम बैच का शुभारंभ तेरापंथ भवन में हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत जैन संस्कार विधि के अंतर्गत संस्कारक महेंद्र दुगड़ द्वारा मंत्रोच्चार के साथ की गई। कार्यक्रम में अभातेयुप के भूतपूर्व अध्यक्ष रतन दूगड़, साउथ सभा अध्यक्ष बिनोद चोरड़िया, टीपीएफ ईस्ट जोन अध्यक्ष प्रवीण सिरोहिया, अभातेयुप प्रतिनिधि जय चोरड़िया, तेयुप साउथ कोलकाता के भूतपूर्व अध्यक्ष अरविंद डागा, निवर्तमान अध्यक्ष राकेश नाहटा, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा पद्मा कोचर तथा टीपीएफ कोलकाता साउथ के अध्यक्ष नरेंद्र सिरोहिया की गरिमामयी उपस्थिति रही। प्रशिक्षण में कुल 46 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षिका हर्षिता जैन ने आत्मविश्वासपूर्वक सार्वजनिक वक्तृत्व कौशल विकसित करने के व्यावहारिक सुझाव व अभ्यास करवाए।

कार्यक्रम के सफल संचालन में संयोजक कुलदीप लूनिया, रोहित बैद, संदीप मनोत एवं बरुण सुराणा की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
05 मई - 11 मई, 2025

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 64वें जन्मोत्सव, 16वें पट्टोत्सव एवं 52वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

संयम-पथ के महापथिक आचार्य महाश्रमण

• साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा •

दुनिया में दो तरह के व्यक्ति होते हैं। पहले प्रकार के व्यक्ति शक्तिसंपन्न और ज्ञानसंपन्न होते हैं, उनमें निर्णय लेने की भी क्षमता होती है। दूसरे प्रकार के व्यक्ति कमजोर, अल्पज्ञ और शक्तिहीन होते हैं। प्रथम वर्ग के व्यक्ति बहुत ऊंचाइयों का स्पर्श कर लेते हैं, जबकि दूसरे वर्ग के व्यक्ति कुछ कदम चलकर थक जाते हैं। प्रश्न है–प्रथम प्रकार के व्यक्ति में ऐसी कौन-सी विशेषता है, जो उनको उत्तरोत्तर अग्रिम सोपानों पर आरोहण कराती है।

सन् २००४ में एक शोध हुआ। उसमें यह स्पष्ट किया गया कि जिनमें आत्म-नियंत्रण होता है उनको शैक्षणिक जगत में सफलता मिलती है और उनकी क्षमताओं का ज्यादा विकास होता है। एक अन्य शोध में भी यही तथ्य उभरकर सामने आया–आत्म-संयम (Self Restraint) व्यक्ति के लिए सफलताओं का द्वार उद्घाटित कर देता है। संयम से नेतृत्व क्षमता के साथ-साथ अन्य क्षमताएं भी विकसित होती हैं, जैसे–कार्य करने से पूर्व चिंतन, विवेकपूर्ण निर्णय, सम्यक् योजना बनाना, शांत और विश्लेषणात्मक तरीके से समस्याओं का समाधान, प्रभावशाली संवाद शैली, सुनने की कला, दूसरों की आवश्यकताओं तथा इच्छाओं की सम्यक्तया आपूर्ति, एकाग्रता, उत्तम समय प्रबंधन, आत्मविश्वास आदि। आश्चर्य होता है कि क्या आत्मसंयम से इतनी शक्तियों का एक साथ विकास हो सकता है? कुछ विरल व्यक्तियों में इन अर्हताओं का विकास देखा जा सकता है और इसका साक्षात् निदर्शन है आचार्य महाश्रमणजी।

आचार्य महाश्रमणजी सहजता, शांति, स्नेह और वात्सल्य के साथ विशाल धर्मसंघ का कुशलता से संचालन कर रहे हैं। उनकी प्रबन्धन शैली, प्रवचन शैली, प्रशासन शैली, समस्या-समाधान शैली, अनुशासन शैली मनोवैज्ञानिक और आकर्षक है। इसका प्रमुख कारण है उनका संयम। उनके पवित्र श्रामण्य का आधार है संयम। संयम से तात्पर्य है इन्द्रिय और मन का निग्रह, अकुशल कार्यों से निवृत्ति और कुशल कार्यों में यतनापूर्वक प्रवृत्ति। पातंजल योगदर्शन के अनुसार 'त्रयाणामेकत्रसंयमः' अर्थात् ध्यान, धारणा और समाधि की समन्विति संयम है। ठाणं सूत्र में तीन प्रकार के संयम का उल्लेख मिलता है–१. मन का संयम २. वचन का संयम ३. काय का संयम।

मन-संयम

जीवन में सबसे ज्यादा चुनौतीपूर्ण कार्य है मन का संयम। मन कभी अतीत की यात्रा करता है, कभी भविष्य की योजनाओं में निमग्न हो जाता है और कभी वर्तमान में जो कार्य सामने है, उस पर चिन्तन करता रहता है। आचार्य महाश्रमणजी अपने मन की लगाम को अपने हाथ में रखते हैं, उसे उन्मुक्त नहीं छोड़ते। वे मनोरंजन की दुनिया में नहीं, आत्मरंजन की दुनिया में जीते हैं, जहां मन बहुत पीछे रह जाता है। उनका मन पानी की तरह चंचल नहीं, अपितु बर्फ की तरह सघन है, स्थिर है, एकाग्र है। एकाग्रता के कारण वे एक कार्य के मध्य दूसरा कार्य भी सम्पादित कर लेते हैं, किन्तु उनकी एकाग्रता भंग नहीं होती। मध्याह्न में प्रायः आचार्यवर मुख्यमुनिप्रवर को पत्रलेखन कराते हैं। उसी दौरान अन्य लोग भी आचार्यवर के पास अपनी समस्या को प्रस्तुत करते हैं। आप उनकी बात सुनते हैं, अपनी अन्तःप्रज्ञा से उनको समाहित कर देते है और पुनः मूल विषय पर आ जाते हैं। यह सब तभी संभव है जब मन का संयम सधा हुआ होता है। मन की निर्मलता और एकाग्रता के कारण ही एक विशाल संघ का कुशलता से नेतृत्व कर रहे हैं।

दो प्रकार के मन होते हैं। Should mind अर्थात् क्या करना चाहिए? क्या करना उचित है? दूसरा है Want mind, क्या चाहता है? चाह हितकर भी हो सकती है और हितकर नहीं भी होती। जिसके संयम की चेतना जागृत होती है, वह Want mind पर विजय प्राप्त कर Should mind के अनुसार उचित निर्णय लेता है। आचार्य महाश्रमणजी का Should mind बहुत अधिक powerful है, हमेशा जनहित और जन-कल्याण का ही चिन्तन करता है।

वाक्-संयम

हमारे अधिकांश कार्य वाणी से होते हैं। वाणी connector भी हो सकती है और cutter भी। समस्याओं को सुलझा भी सकती है और उलझा भी सकती है। किसी के मन को शांत कर सकती है और किसी को अशान्त। आचार्य महाश्रमणजी को मानो मधुर और कल्याणकारिणी वाणी का वरदान प्राप्त है। आप सहज संयताभाषी हैं। संयतभाषी वह होता है, जो कटु, कर्कश, सावद्य, निश्चयकारिणी भाषा नहीं बोलता, अन्य व्यक्ति कुपित हो ऐसी भाषा भी नहीं बोलता है। वह उसी भाषा का प्रयोग करता है, जो सत्यपथगामिनी, उत्थानकारिणी और मृदु हो। आचार्य महाश्रमणजी के जीवन में ये सारी विशेषताएं परिलक्षित होती हैं। उनका वाक्संयम विलक्षण है। आज minimum investment maximum achievement का युग है। आचार्य महाश्रमणजी अल्प शब्दों के प्रयोग से बहुत कुछ बता देते हैं और आगन्तुकों को संतुष्ट भी कर देते हैं। अल्प में बहुत कुछ बता देना उनकी वाक् कला का वैशिष्ट्य है। कभी-कभी साधु-साध्वियों को सीमित शब्दों में संदेश प्रेषित करते हैं लेकिन जो बात अपेक्षित है वह उसमें आ जाती है। उनका प्रत्येक शब्द करुणा, वत्सलता, प्रेरणा, ऊर्जा और सकारात्मकता से भरपूर होता है।

सुकरात के पास एक व्यक्ति आया। कहा– "मैं आपके शिष्य के विषय में कुछ कहना चाहता हूं।' सुकरात ने पूछा- 'तुम जो बात कहना चाहते हो, क्या वह बात सत्य है? क्या वह अच्छी है? क्या वह उपयोगी है?' उस व्यक्ति ने प्रत्युत्तर में कहा– 'वह बात सत्य नहीं है, अच्छी नहीं है और उपयोगी भी नहीं है।' सुकरात ने कहा– 'ऐसी निरर्थक बात कहकर मेरा समय क्यों बर्बाद कर रहे हो।' आचार्य महाश्रमणजी भी उसी बात को सुनना या कहना पसंद करते हैं, जो बात सत्य हो, अच्छी हो और उपयोगी हो।"

आचार्य महाश्रमणजी सत्य महाव्रत, भाषा समिति और वाग्गुप्ति की समग्रता से साधना कर रहे हैं। एक बार जनता को संबोधित करते हुए आपश्री ने कहा था- "जो साधक मिष्ट (मधुर), शिष्ट और इष्ट भाषा का प्रयोग करता है वह अपनी वाणी को विशिष्ट बना लेता है।" आचार्यप्रवर ने मिष्ट, शिष्ट और इष्ट भाषा का प्रयोग कर वाणी को विशिष्ट बनाया है। यही वजह है कि उनके वचन आदेय हैं। वे किसी भी कार्य के लिए किसी को भी कोई निर्देश देते हैं, वह व्यक्ति तत्काल उस कार्य को करने के लिए तत्पर हो जाता है। वे वचन वर्गणा के पुद्गलों का स्वल्पतम उपयोग करते हुए भी हर कार्य को बड़े अच्छे ढंग से संपादित करते हैं। आचार्य महाश्रमणजी का जीवन वाक्संयम का उत्कृष्ट उदाहरण है।

काय-संयम

भिक्षु की एक कसौटी है काय-संयम। वह अपने शरीर की प्रवृत्तियों का संयम करता है। वह हाथों को, पांवों को संयत रखता है। जो हाथ हिंसा न करे, अदत्त ग्रहण न करे, असत्य का संकेत न करे, असत्य लेखन न करें तथा किसी भी प्रकार के अनाचरणीय कार्य न करें वे संयत हाथ होते हैं। आचार्य महाश्रमणजी के हाथ इन सब नकारात्मक कार्यों से सर्वथा दूर रहते हैं। उनके हाथ करुणा से प्रवृत्त होते हैं तो प्रमार्जन करते हैं, वत्सलता के लिए उठते हैं तो आशीर्वाद देते हैं, जनकल्याण करते हैं और जब शिष्य के मस्तक पर टिकते हैं तो ऊर्जा का संप्रेषण करते हैं।

पैरों का संयम व्यक्ति की ऊर्जा का संरक्षण करता है। भिक्षु के लिए पांव का संयम भी आवश्यक है। पैर शरीर का अनिवार्य अंग है। कहा जाता है बिना पर का पक्षी और बिना पैर का मनुष्य बेकार होता है। पैर गतिशीलता के प्रतीक हैं। साधु कब, कहां, कैसे उनका उपयोग करे, इसका विवेक आवश्यक है। आचार्य महाश्रमणजी ने अपने पैरों का संयम साध लिया। मुनि अवस्था में घण्टों-घण्टों तक एक आसन में बैठकर ध्यान का प्रयोग करते थे। वर्तमान में भी मुख्य कार्यक्रम में प्रायः सुखासन में विराजमान रहते हैं। यदि आसन बदलना भी हो तो धीरे से बदलते हैं। यदि कुर्सी पर विराजते हैं तब भी पैरों की संयत मुद्रा रहती है। कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है मानो स्थिरता मूर्तिमान हो गई है। यह है पैरों का निवृत्ति पक्ष। दूसरी ओर जनकल्याण के लिए हजारों किमी. की पदयात्राएं कर रहे हैं। उनका एक-एक कदम भी ईर्यासमितिपूर्वक यानी पूरी जागरूकता से उठता है। रास्ते में कच्चा पानी हो, हरियाली हो, उस रास्ते का अतिक्रमण नहीं करते। यहां तक की यदि पक्षी दाना चुग रहे हों तो उस मार्ग से भी गुजरना नहीं चाहते। पैरों का अनावश्यक हलन-चलन भी नहीं करते। कभी करना पड़े तो प्रमार्जनपूर्वक करते हैं। ५-१० मिनट तक एक आसन में बैठना भी मुश्किल होता है, वहां एक आसन में लम्बे समय बैठना आचार्यवर की स्थितप्रज्ञता का परिचायक है।

बाह्य जगत् से सम्पर्क का माध्यम है इन्द्रियां। इन्द्रियों के मनोनुकूल विषय सामने हों और उनमें प्रियता का भाव न जागे, क्या यह संभव है? हां संभव है। इसके स्वयंभू साक्ष्य हैं आचार्य महाश्रमण। आकर्षण या प्रियता जैसे शब्द उनके शब्दकोश में भी नहीं है। अनुकूल या प्रतिकूल दृश्य हो या शब्द, आहार हो या कोई अन्य वस्तु, आचार्य महाश्रमणजी के मध्यस्थ भाव अथवा वीतराग भाव को कोई खण्डित नहीं कर सकता। आचार्यवर इन्द्रियातीत चेतना के स्तर पर जीते हैं। कहा जाता है–Lock the external world, unlock the inner world and experience the true happiness–यह बात उनके जीवन में पूर्णतया चरितार्थ होती है। मई-जून की भीषण गर्मी में जहां लोग घर छोड़ना नहीं चाहते, वहां आप निरंतर पदयात्रा करते हैं। स्थान पर पहुंचने के बाद भी जहां पंखा चलता है, वहां बैठने का चिन्तन भी नहीं करते। स्पर्शनेन्द्रिय विजय का इससे बड़ा उदाहरण क्या हो सकता है। पांचों इन्द्रियों से संबंधित कोई भी भोग उनके साधक मन को आकृष्ट नहीं कर सकता।

मन और इन्द्रियों का अधिक उपयोग व्यक्ति की ऊर्जा का क्षरण करता है। आचार्य महाश्रमणजी उनके अल्पतम और यतनापूर्वक उपयोग से, संयम से अपनी मन, वचन और शरीर की ऊर्जा का संरक्षण और संवर्धन कर रहे हैं। ऊर्जावान व्यक्ति ही अपने व्यक्तित्व, कर्तृत्व और नेतृत्व से सबके मन को प्रभावित कर सकता है। कहा गया है-

Heated gold becomes ornament,
Beat copper becomes wire,
Depleted stone becomes statue,
Restraint soul becomes God.

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 64वें जन्मोत्सव, 16वें पट्टोत्सव एवं 52वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

वीतरागकल्प आचार्य महाश्रमण

● साध्वी कनकरेखा ●

नव-सृजन के श्रेष्ठ पुष्पों की पराग लुटाने, शुभ भावों का अर्घ्य चढ़ाने, परम पावन पवित्र पलों का अमृतपान करने अध्यात्म-रस पिपासु भक्तों ने भगवान की अर्चना की, अभ्यर्थना की।

अभिवादन में कहा —

त्वदास्यलासिनी नेत्रे, त्वदुपास्ति करौ-करौ।
त्वद्‌गुणश्रोत्रिणी श्रोत्रे, भूयास्तां सर्वदा मम।।

अर्थात् —

प्रभो! आपकी वीतराग मुखमुद्रा में मेरे नेत्र, आपकी उपासना में मेरे हाथ, आपके गुण-श्रवण में मेरे कान संलग्न रहें।

क्योंकि —

ये मूर्ति तव पश्यतः शुभमयी, ते लोचने-लोचने।
या ते वक्ति गुणावलिं निरुपमां, सा भारती-भारती।।
या तो न्यंचति चति पादयोर्वरदयोः, सा कन्धरा-कन्धरा।
यत्ते ध्यायति नाथ! वृत्तमनद्यं, ते मानसं-मानसं।।

अर्थात् —

जो पवित्र वीतराग रूप को देखते हैं,
वे ही नेत्र-नेत्र हैं।
जो वाणी आपका गुणानुवाद करती है,
वही वाणी-वाणी है।
जो आपके चरणों में झुकती है,
वही ग्रीवा-ग्रीवा है।
जो आपके निर्दोष जीवनवृत्त का ध्यान करता है, वही मन-मन है।

वीतराग स्वरूप चिंतन, अनुचिंतन की अनुप्रेक्षा से वीतराग की दिशा में निरन्तर गतिशील तीर्थंकर के सक्षम प्रतिनिधि, वीतरागकल्प आचार्यश्री महाश्रमणजी ने विश्व की विरल विभूतियों में सर्वोच्च स्थान पाया है।

कलियुग में सतयुग-अवतारी सिद्धपुरुष आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी नैसर्गिक क्षमताओं को विश्व-मानचित्र पर नई पहचान दी। प्रगति के खुले आकाश में विकास की दिशाएँ उद्घाटित कर, अपने महनीय कर्तृत्व में इन्द्रधनुषी रंग भरे।

तेरापंथ के ताज महाश्रमण सरताज ने अपने अप्रतिम पुरुषार्थ से जिंदगी के कोरे कागज पर ऐसी लकीरें खींची, जो सृजन के नित नए स्वस्तिक उकेर रही हैं। आपका हर चरण श्रेयस् की ओर गतिमान है। युगीन विचारों को नई दिशा प्राप्त हो रही है। आपका हर चिंतन समाज सुधार का नव संदेश देता है। पुरुषार्थ की सतत परिक्रमा से संघ के उजले दर्पण में मुनि मुदित से महातपस्वी आचार्य महाश्रमणजी का व्यक्तित्व स्फटिक के समान निर्मल है, स्वच्छ है, पवित्र है, पारदर्शी है।

किसी विचारक ने कहा — 'स्मार्ट वर्क बुद्धिमान व्यक्ति ही कर सकता है। नई ऊंचाइयाँ छूने का जज्बा उसके भीतर पैदा होता है। उसके सामने सारी असफलताएँ बौनी हो जाती हैं।'

सच में, एक अलौकिक अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के कर्तृत्व को उजागर करता है उसका Smart Work। उसके तीन पैरामीटर बताए गए हैं —

Peaceful Mind

मदर टेरेसा के शब्दों में — Peace begins with a Smile.

'शांति की शुरुआत मुस्कान से होती है।'

सच में, आचार्यश्री महाश्रमणजी की मुस्कान हर पल बरकरार है। आपकी सहज, सरल, शांत, सौम्य मुखमुद्रा; सुधा बरसाता हुआ चेहरा; आशीर्वाद से उठे हाथ; वात्सल्य बरसाते नयन; करुणा का वर्षण करती वाणी — हर इंसान के मन-मस्तिष्क में आत्म-शांति की गहरी अनुभूति करवाती है। आपकी उपासना में पहुंचने वाला हर व्यक्ति शांतिरूपी समृद्धि का वरण करता है।

अन्तर्यात्रा के विविध प्रयोगों से मस्तिष्क के प्रत्येक Neurons को सक्रिय कर आपने उसे Peaceful बनाया।

एक मार्मिक श्लोक —

विहाय कामान् यः सर्वान्, पुमां श्चरति निस्पृहः।
निर्ममो निरहंकारः, स शान्तिमधिगच्छति।।

जो सर्वकामनाओं को त्यागकर किसी भी प्राणी या पदार्थ से निस्पृह हो विचरता है, अहंकार-ममकार से मुक्त होता है — वही शांति को प्राप्त करता है।

सचमुच, शांति का परमधाम है आचार्यश्री महाश्रमण का जीवनदर्शन।

Powerful Mind

ब्रह्म मुहूर्त, अमृतवेला के पवित्र समय में, प्रकृति प्रदत्त पीयूषभरे आहार का अमृतपान कर अमृत पुरुष ने उज्ज्वल आभामंडल का निर्माण किया। आपके चरणकमलों से निकलती हुई पावरफुल ऊर्जा को प्राप्त करने वाला व्यक्ति नई शक्ति, नई ऊर्जा व नई ताजगी का अनुभव करता है। आपके अवग्रह में प्रवेश करने वालों की आपदा-विपदा, बाधाएँ दूर हो जाती हैं। अशुभ योग और अशुभ चिंतन — शुभ भावों में परिवर्तित हो जाते हैं। आत्मा के आसपास प्राणशक्ति का नियोजन कर आपने शक्तिशाली कवच धारण किया है।

'आत्मवत् सर्वभूतेषु' — इस आर्षवाणी को चरितार्थ कर —

जयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए।
जयं भुंजंतो भासंतो, पावकम्मं न बंधई।।

जीवन में पापभीरुता के इस शुक्ल पक्ष से आपने अध्यात्म के अक्षुण्ण वैभव को प्राप्त किया है।

Positive Mind

प्रतिकूलता के झोंकों में भी अनुकूलता की शीतल बयार का अहसास कराते हैं — ज्ञान के अक्षयकोष आचार्यश्री महाश्रमणजी। आपकी Positivity इतनी Strong है कि संघर्ष हो या तूफान, कोरोना हो या भूकंप — हर परिस्थिति में सम रहकर, हर सफलता के उजले शिखर पर आरोहण किया है। सकारात्मक सोच से उठी मस्तिष्क की प्रत्येक तरंगें 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' के रूप में आपके जीवन का श्रृंगार बन गई हैं।

'कामयाबी के हर शिखर पर आपका नाम है,
आपके हर कदम पर दुनिया का सलाम है।
हिमालयी संकल्पों को पूरा करना आपका काम है,
आपके जीवन का हर पल अभिराम है।'

श्रद्धेय के प्रति अनन्य श्रद्धा समर्पित—

अष्टगणी संपदा के धारक — यश, कीर्ति, प्रतिष्ठा अहर्निश आपके पद की परिक्रमा करते हैं। सफलता आपके चरण चूमती है। धर्मचक्र आपके आगे-आगे चलता है। चहुँदिशाओं में विजय ध्वज फहराया जाता है। यशोगान से सारा भूमंडल गुंजायमान है —

'जय-जय ज्योतिचरण, जय-जय महाश्रमण!'

दो युगप्रधान आचार्यों के द्वारा हुआ आचार्य श्री महाश्रमण जी का निर्माण

● मुनि कमल कुमार ●

आचार्य श्री महाश्रमण जी का निर्माण दो-दो युगप्रधान आचार्यों के कुशल मार्गदर्शन में हुआ है। इसीलिए आपकी प्रत्येक प्रवृत्ति अपने आप में अनुपम और अद्वितीय कही जा सकती है। आपकी अप्रमत्त चर्या जन-जन के लिए प्रेरणा पाथेय है। आपने अपने गहन चिंतन-मनन से जो धर्मसंघ की गरिमा और महिमा बढ़ाई है और अनवरत बढ़ा रहे हैं, वह अन्य मतावलंबियों के लिए भी प्रेरणा है। आपका प्रत्येक चिंतन साधना की दिशा में गतिमान बनाने वाला है।

दीक्षा के बाद प्रथम मिलन से लेकर आज तक देख रहा हूँ कि प्रमाद को कहीं देखने का अवसर ही नहीं मिला। मुनि अवस्था में भी आपकी जागरूकता बेमिसाल थी। अपने कार्य व अध्ययन-स्वाध्याय की नियमितता हम सबके लिए प्रेरणा थी। गुरुदेव तुलसी आपकी हर चर्या से प्रसन्न थे। आपकी आचार-विचार की निर्मलता को देखकर ही अल्पायु में आपको 'मुदित' से 'महाश्रमण' बना दिया।

आगम-निष्ठा, आज्ञा और अनुशासन में सुदृढ़ देखकर आपको युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के अंतरंग सहयोगी के रूप में नियुक्त कर दिया गया। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने आपकी साध्वाचार की पारदर्शिता और संघीय विकास में पराक्रम को देखकर आपको अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया। शायद यह तेरापंथ धर्मसंघ के लिए प्रथम ही होगा कि नियुक्ति-पत्र को दो आचार्यों ने निहारा हो। दोनों आचार्यों का गहरा विश्वास ही आज साकार हो रहा है।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के शासनकाल में कीर्तिमानों का अंबार-सा लग गया है। आपकी सन्निधि में आने वाला आपका ही बन जाता है। आपकी कोमल वाणी और मृदु अनुशासन को देखकर अन्य संप्रदाय के साधु-साध्वी ही नहीं, आचार्य और गच्छाधिपति भी यह कहने को विवश हो जाते हैं कि आपकी अखूट पुण्याई है। आपकी प्रबल पुण्याई है। आपकी पुण्याई का कोई पार नहीं है। अन्यथा इस बौद्धिक और वैज्ञानिक युग में इतने बड़े धर्मसंघ का संचालन करना कठिन ही नहीं, महाकठिन है।

धर्मसंघ में बाल, युवा, प्रौढ़, बुजुर्ग—सभी तरह के साधु-साध्वी हैं। सबको प्रसन्नचित्त रखना, सबको समाधि प्रदान करना, सबके विकास में सहयोग प्रदान करना कोई आसान काम नहीं है, परंतु प्रत्येक साधु-साध्वी का स्वर यही निकलता है कि 'गुरुदेव की मुझ पर बहुत कृपा है, गुरुकृपा से सब तरह से आनंद है।' इसी कारण इस धर्मसंघ को नंदनवन, कामधेनु, कल्पवृक्ष और चिंतामणि की उपमाओं से उपमित किया जाता है।

आचार्य श्री महाश्रमण जी का बाह्य और आंतरिक व्यक्तित्व चुम्बक की तरह सबको आकृष्ट करने में सक्षम है। शायद आप प्रथम आचार्य हैं, जिनका जन्म, दीक्षा और पट्टोत्सव—तीनों एक ही मास में और शुक्ल पक्ष में मनाने का अवसर प्राप्त हुआ है।

मैं इस पुनीत बेला में यह मंगलकामना करता हूँ कि आपकी कृपा सदैव मुझ पर, समस्त धर्मसंघ व समर्पित शरणागतों पर बनी रहे, जिससे आत्मकल्याण के साथ-साथ धर्मसंघ की प्रभावना निरंतर प्रवर्धमान बनी रहे। गुरुदेव के सुस्वास्थ्य की मंगलकामना करता हूँ।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
05 मई - 11 मई, 2025

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 64वें जन्मोत्सव, 16वें पट्टोत्सव एवं 52वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

आचार्य महाश्रमण: अध्यात्म के 'सुपरस्टार', करुणा के 'यूनिवर्स' – 64 वां स्वर्णिम वर्ष

● साध्वी केवलयशा ●

लाडनूं की पावन धरा पर, हम एक ऐसे व्यक्तित्व का 64वां जन्मदिन मना रहे हैं, जिन्होंने अध्यात्म को भी 'कूल' बना दिया है, वे हैं- हमारे गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण। वे न केवल जैन धर्म के ध्वजवाहक हैं, बल्कि करुणा और सेवा के 'ब्रांड एंबेसडर' भी हैं, जिन्होंने लाखों दिलों पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

टेक्निकल गुरु :

ज्ञान का 'हाई-स्पीड' इंटरनेट

आचार्यश्री के प्रवचन किसी 'हाई-स्पीड' इंटरनेट कनेक्शन की तरह हैं। ज्ञान का अथाह सागर, जो हर जिज्ञासा को तुरंत शांत कर देता है। उनके पास हर सवाल का ऐसा 'अपडेटेड' वर्जन मौजूद है, जो हमारी आधुनिक सोच को भी टक्कर देता है। और उनकी याददाश्त? किसी 'टेराबाइट' स्टोरेज डिवाइस से कम नहीं, जहाँ अनगिनत अनुभव, अनगिनत शास्त्र और ज्ञान के सूत्र सुरक्षित हैं।

मनोरंजन का तड़का :

'आचार्यजी के अनसुने किस्से'

वैसे तो आचार्यश्री गंभीरता और साधना के प्रतीक हैं, लेकिन उनके सान्निध्य में रहने वालों को उनकी हास्य की हल्की फुहारें महसूस होती रहती हैं। एक बार, जब वे किसी गाँव में प्रवचन दे रहे थे, तो एक छोटा बच्चा बार-बार मंच के पास आ रहा था। किसी ने उसे टोका तो आचार्यश्री ने मुस्कुराकर कहा, 'लगता है, यह बालक भी आध्यात्मिक 'लाइव अपडेट' का बहुत बड़ा फैन है।' उनकी इस सहज टिप्पणी से सभी हँस पड़े। ऐसे छोटे-छोटे पल उनके व्यक्तित्व में एक मानवीय रंग भर देते हैं।

एक और घटना याद आती है, जब एक शिष्य ने उनसे पूछा कि मन को कैसे वश में किया जाए। आचार्यश्री ने मुस्कुराते हुए कहा, 'जैसे लोग अपने मोबाइल के नोटिफिकेशन्स को मैनेज करते हैं, वैसे ही अपने मन के विचारों को भी फिल्टर करना सीखो। जरूरी को रखो, बाकी को 'स्वाइप लेफ्ट' कर दो।' इस उदाहरण से जटिल बात भी आसानी से समझ में आ सकती है।

शिक्षा की 'एप':

ज्ञान हर हाथ में

आचार्यश्री प्रत्यक्ष रूप से स्कूल भले ही न चलाते हों, लेकिन आध्यात्मिक शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण किसी 'मोबाइल एप' की तरह है - ज्ञान हर किसी के लिए सुलभ और आसान होना चाहिए। उनके (आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण) के नाम से स्थापित शिक्षा केंद्र इसी 'एक्सेसिबिलिटी' के सिद्धांत पर काम कर रहे हैं, जहाँ हर वर्ग के विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। हमारे लिए आपकी शिक्षा एक ऐसा 'एप' है, जो हर व्यक्ति के जीवन के हर मोड़ पर सही 'नोटिफिकेशन' भेजता है, सही राह दिखाता है।

सेवा का 'क्लाउड' :

करुणा हर जगह

सेवा के क्षेत्र में आचार्यश्री का योगदान किसी 'क्लाउड' नेटवर्क की तरह है - प्रेरणा हर जगह फैली हुई है और जिस किसी क्षेत्र में तेरापंथ धर्मसंघ के सदस्य जरूरतमंद साधु-साध्वियां हो वहां तक मदद पहुँच रही हैं। आपश्री के अंतरंग परिवार से ही परस्पर सेवा कार्य हो रहा है, आचार्य महाश्रमण स्वयं मैनेजमेंट करें रहे हैं। सेवा चाहे शारीरिक हो, चाहे मानसिक या आध्यात्मिक, सेवा में सहयोग मिल रहा है। यह सब आपके करुणा के 'सर्वर' से ही संचालित हो रहा है। आपका जीवन स्वयं एक 'सर्विस मॉडल' है, जो निस्वार्थ सेवा का महत्व सिखाता है।

एक शिष्या का 'फीडबैक ':

अनंत कृतज्ञता

गुरुदेव, आपको शत-शत नमन! आपकी करुणा हमारा 'एंटीवायरस' है, जो हमें नकारात्मकता से बचाता है। और आपका आशीर्वाद हमारा 'बैकअप' है, जो हमें हर मुश्किल में सहारा देता है। हम अपने जीवन का हर पल आपको समर्पित करते हैं।

मंगलकामनाओं का 'अपलोड':

आपके चरणों में प्रार्थना

हे गुरुदेव! आपके 64वें जन्मदिन पर हम सबकी यही मंगलकामना है कि आपकी 'इंटरनल बैटरी' हमेशा फुल रहे, आपका 'सिग्नल' हमेशा मजबूत रहे और आपका ज्ञान का 'डेटा' हम तक हमेशा पहुँचता रहे। आपका जीवन हम सभी के लिए एक प्रेरणादायक 'रोल मॉडल' बना रहे।

तो, यह हैं हमारे आचार्य महाश्रमण –

एक ऐसी आध्यात्मिक शक्ति जो 64 वर्षों से न केवल हमें ज्ञान का 'पासवर्ड' दे रही है, बल्कि करुणा के 'फायरवॉल' से हमारी रक्षा भी कर रही है। उनका जीवन एक खुली किताब है, जिसका हर पृष्ठ संपूर्ण मानव जाति को बेहतर इंसान बनने की प्रेरणा देता है। आइए, इस विशेष दिन पर हम सब मिलकर उनके दिखाए 'अपग्रेड' के बटन को दबाएं और अपने जीवन को प्रेम, सेवा और ज्ञान के नए संस्करण में बदल दें। युगों-युगों तक उनकी प्रेरणा का 'सिग्नल' हम तक पहुँचता रहे।

"आधुनिकता के दौर में भी, श्रद्धा का भाव है अनमोल।

आपके ज्ञान के प्रकाश में साध्वी केवलयशा, अर्पित करती कृतज्ञता के बोल।

आपश्री के गाइडेंस की लाइट में लाइफ का हर लेसन है ब्राइट,

हमेशा रहेंगे आपके आभारी, गुरुदेव! यही हमारी हार्टफेल्ट राइट।।"

सुरक्षा के पायदान

● साध्वी कमनीयप्रभा ●

जीवन में संरक्षण, संवर्धन और सम्पोषण ये तीन शब्द महत्वपूर्ण हैं। इनके साथ एक शब्द और जुड़ने से इसका दायरा विशाल हो जाता है- वह है 'सुरक्षा'।

प्रश्न है- किसकी सुरक्षा? शरीर की अथवा आत्मा की? दोनों ही सुरक्षा आवश्यक व महत्वपूर्ण है- बाह्य व आंतरिक।

आत्मा की सुरक्षा हर प्राणी का अंतिम लक्ष्य है जिसे प्राप्त करने के बाद किसी भी प्रकार की सुरक्षा प्राप्त करने की अपेक्षा नहीं रहती क्योंकि कर्म मुक्त आत्मा स्वतः सुरक्षित है। किन्तु जब तक सिद्धि की प्राप्ति नहीं होती, आत्मतत्त्व की प्राप्ति नहीं होती, तब तक शरीर की सुरक्षा भी करणीय है क्योंकि इस शरीर का ही एक मात्र सामर्थ्य है जिसके द्वारा व्यक्ति शिव पद की प्राप्ति कर सकता है। कहा भी है - 'वपुषि विचिन्त्य परमिहसारं - शिव साधन सामर्थ्य मुदारम्।'

इस आधार पर सुरक्षा के दो विभाग किए जा सकते हैं- बाह्य सुरक्षा व आंतरिक सुरक्षा। बाह्य सुरक्षा से तात्पर्य है- शरीर की सुरक्षा व आंतरिक सुरक्षा से तात्पर्य है- आत्मा की सुरक्षा। सूरत चातुर्मास के दौरान मैंने जाना शरीर की सुरक्षा के लिए सरकार कितना प्रबन्धन करती है।

2024 चातुर्मास में जब एक बार आर.एस.एस. के प्रमुख 'मोहन भागवत जी' आए तो देखा कि उनके साथ जो सुरक्षादल आया था, वह पहले से कुछ भिन्न था। मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई, समाधान भी मिल गया कि इन्हें Z+ Security प्राप्त है। मैंने देखा व जाना कि Z+ Security एक उच्च कोटि की सुरक्षा है। यह सुरक्षा VIP को ही मिलती है और यह केन्द्र सरकार के द्वारा प्रदान की जाती है। इसमें मुख्यतः 36 सुरक्षाकर्मी होते हैं। घर की सुरक्षा हेतु सभी ताले Electronic होते हैं। कुत्ते भी दिन रात सुरक्षाकार्य में तैनात रहते हैं जो चारों ओर नजर रखते हैं। सुरक्षा प्राप्त व्यक्ति जहां भी जाते हैं सुरक्षादल साथ रहता है।

मोहन भागवतजी जब आचार्य श्री महाश्रमण जी के दर्शनार्थ 'महावीर युनिवर्सिटी' में आए, उनके आने से पहले ही एक सुरक्षा दल पहुंच गया। जिस रास्ते से वे आए और जहां-जहां वे ठहरे उन स्थानों की सुरक्षाकर्मियों ने बड़ी जागरूकता से जांच की व तैनात खड़े रहे। यह सारा दृश्य देख मुझे लगा उन्हें बाह्य सुरक्षा तो सरकार की ओर से प्राप्त है और वे आंतरिक सुरक्षा प्राप्त करने, आंतरिक संरक्षण और सम्पोषण प्राप्त करने के लिए आचार्यश्री महाश्रमणजी के चरणों में उपस्थित हुए हैं। वैसे भागवतजी श्रीचरणों में प्रायः साल में एक बार आते हैं क्योंकि आचार्य श्री महाश्रमण आंतरिक सुरक्षा की कला में निपुण हैं। अध्यात्म शिखर को प्राप्त अध्यात्म गुरु आचार्य श्री महाश्रमणजी अपनी आत्मसुरक्षा के लिए अहर्निश कवच का निर्माण करते हैं। आचार्य महाश्रमणजी शरीर की सुरक्षा को कम महत्व देते हैं और आत्मा की सुरक्षा के लिए पल-पल जागरूक रहते हैं। अपने गात्र रत्न की ओर ध्यान ही नहीं देते, इसकी सेवा सुश्रूषा भी नहीं के बराबर करते हैं, परन्तु आत्मा की सुरक्षा के लिए वे नींद में भी उतने ही जागरूक रहते हैं जितने कि अनिद्रा में। अनेक उदाहरणों में एक उदाहरण इस प्रकार है- जब कभी आपको रात्रि में करवट भी बदलना हो तो आप पहले प्रमार्जन करेंगे, कभी-कभी तो पैर के अंगूठे में भी प्रमार्जनी धारण कर प्रमार्जन कर करवट बदलते हैं, इस तरह शयन क्रिया में भी आप अपनी आत्मसुरक्षा के प्रति पूर्ण जागरूक रहते हैं।

बाह्य जगत में जहां लोग अपने शरीर की सुरक्षा हेतु अनेकानेक उपाय करते हैं, वहीं आप अपने योगों को अर्थात्- मन, वचन और काया को ही सुरक्षाकर्मी की तरह तैनात कर आत्मा की रक्षा करते हैं।

भगवान महावीर ने कहा है-

'अप्पा खलु सययं रक्खियव्वो,
सव्विंदिएहिं सुसमाहिएहिं।
अरक्खिओ जाइपहं उवेइ, सुरक्खिओ
सव्वदुहाण मुच्चई।।'

सब इन्द्रियों से सुसमाहित होकर निश्चित रूप से आत्मा की सतत रक्षा करनी चाहिए। क्योंकि अरक्षित आत्मा जन्म-मरण को प्राप्त होती है। सम्यक् प्रकार से रक्षित आत्मा सब दुःखों से मुक्त हो जाती है।

आत्म रक्षा का एक उपाय है- 'संयम'। आपकी जीवनशैली में 17 प्रकार के संयम का चित्रपट प्रतिबिम्बित हो रहा है। 17 प्रकार के संयम से आपकी आत्मा सर्वरूपेण रक्षित है, सुरक्षित है। मानो आपको पाकर संयम के ये प्रकार भी धन्य, कृतपुण्य हो गए हैं। हरियाली तो दूर आप अत्यन्त सूक्ष्म शैवाल (काई) को लांघने के अवसर पर भी भीतर से प्रकम्पित हो जाते हैं। आपने आत्मरक्षा के लिए संयम के अभेद्य किले का निर्माण किया है। इतना ही नहीं उस किले की चारों दिशाओं में आहार संयम, वाणी संयम, काय संयम, दृष्टि संयम के जागरुक पहरेदार तैनात किए हुए हैं।

महायोगी आचार्य महाश्रमणजी के भीतर कोई Automatic Electronic Switch है जो आत्मरक्षा हित ring बजा देता है, वह है- 'आगमवाणी'।

'उवसमेण हणे कोहं,'
'तवे सुया उत्तम बंभचेरं,'
'देहे दुक्खं महाफलं,'
'नन्नत्थ निज्जरट्ठयाए, तवमहिट्ठेज्जा,'

आदि ऐसे अनेक आगम वाक्यों की अनुप्रेक्षा आपश्री को लक्ष्य की तरह गतिशील करती है। आपकी आंतरिक सुरक्षा को देख लगता है कि बाह्य सुरक्षा Z+ Security जो High Level की गिनी जाती है, आपकी आत्म सुरक्षा उससे भी आगे की है। इसलिए सम्पूर्ण सुरक्षा का मार्गदर्शन पाने के लिए जगत् आपके चरणों में उपस्थित होता है। मानवता के महामसीहा आचार्यश्री महाश्रमणजी का जीवन हम सबके लिए आदर्श है, पथदर्शक है। आपश्री के 64वें जन्मोत्सव पर हम यही शुभकामना करते हैं कि आप चिरायु हों और आपश्री की दीर्घ शासना में हम भी आत्मसुरक्षित बनकर लक्षित मंजिल को प्राप्त करें।

'शासनश्री' साध्वी मदनश्री जी के प्रति चारित्रात्माओं के उद्गार

गुणों का समवाय - 'शासनश्री' साध्वी मदनश्रीजी

● साध्वी प्रणतिप्रभा ●

हर व्यक्ति के जीवन में कुछ न कुछ विशेषताएं होती है। लेकिन वे व्यक्ति विरल होते हैं जिनमें विशेषताओं का अनुपात अधिक होता है। 'शासनश्री' साध्वी मदनश्रीजी को बीदासर चाकरी में निकट से जानने का अवसर मिला, मैंने अनुभव किया- वो गुणों की पुंज हैं।

चाकरी के दौरान हम जितनी बार उनका कोई छोटा सा भी काम करते तो वे हाथ जोड़कर आधा झुक जाते और फरमाते "कृपा करवाई, शुभ दृष्टि कराई, माइत पणो करवायो।" यह उनकी उत्कृष्ट विनम्रता और उदारता का परिचायक है।

शासनश्री जी की गायन कला विशिष्ट थी। जब वे गीत गाते तो मग्न हो जाते। वे प्रायः रोज गाते 'भीखणजी ढूंढ़ निकाल्यो ओ पावन तेरापंथ।' उनके गीत को सुनकर लगता कि वे तन्मयता और मधुरता से गाते हैं।

साध्वीश्री जी की प्रमोद भावना उत्कर्ष पर थी। किसी की विशेषता को देखते तो दिल खोलकर उसकी प्रमोद भावना भाते। सेवादायी साध्वियों के लिए बार-बार कहते 'सत्यां बहोत चोखा है, म्हारी घणी सेवा करे।'

साध्वीश्री जी की गुरु भक्ति बेजोड़ थी। बार-बार फरमाते - "आ तो आपणी पुण्याई है, आपां नै इस्या गुरु मिल्या है।" उस समय परम पूज्य आचार्य प्रवर का चातुर्मास प्रवास छापर में हो रहा था।

आचार्य प्रवर ने कालूयशोविलास व्याख्यान फरमाया। जब कोई श्रावक छापर से बीदासर आचार्य प्रवर का प्रवचन श्रवण कर आते तो वे उनसे पूछते- 'कालूयशोविलास कठै तक पहुंचग्यो' फिर उनसे सुनते और भाव-विभोर होकर फरमाते 'मैं स्वयं गुरुदेव रै मुखारविंद स्यूं सुणनो चाहूं, म्हारा कान तरस रह्या है।' दिन में कितनी ही बार गुरुदेव का स्मरण करते।

87 वर्ष की अवस्था में भी साध्वीश्री का उत्साह प्रवर्धमान था। कोई भी प्रसंग आता तो वे गीत का निर्माण करते, उसको गाने का अभ्यास करते, भावनाओं से ओत प्रोत होकर गाते।

साध्वीश्री जी की सरलता प्रशस्य थी। एक बार उन्हें सर्दी-जुकाम की शिकायत हो गई। डॉक्टर को दिखाया, शाम 5 बजे का समय था। डॉक्टर ने कहा मैं दवाई दे रहा हूं, इसे दिन में तीन बार लेना है। साध्वीश्री जी अपने कक्ष में पधारे। दिन अस्त होने में घंटे भर का समय शेष था। आपने कहा मैं दवाई की एक खुराक अभी, एक सवा पांच बजे और एक पौने छः बजे ऐसे तीन बार लेकर फिर त्याग कर दूंगी। मैंने निवेदन किया महाराज डॉक्टर ने दवाई दिन में तीन बार लेने को कहा है, न कि घंटे में तीन बार। उन्होने मुस्कुरा कर कहा- अच्छा ठीक है ध्यान रखूंगी।

उनकी सेवा भावना अनुकरणीय थी। उन्होंने अपने अग्रणी साध्वीश्री जी और साध्वी श्री वसुमतीजी की जिस अग्लान भाव से सेवा की वह प्रेरणास्पद है।

वे व्यवहार कुशल साध्वीश्री जी थे। जो भी श्रावक-श्राविकाएं उनके दर्शन करते वे मुस्कुराकर उनका नाम लेकर उनकी वन्दना स्वीकार करते, उन्हें बतलाते।

'शासनश्री' साध्वी मदनश्रीजी का नाम लेते ही सहज ही उनकी विशेषताएं चलचित्र की भांति हमारे सामने आ जाती हैं। उन्हें लिखने के लिए न चिंतन करना पड़ता, न कलम को रुकना पड़ता, वास्तव में जीवन तो ऐसा ही होना चाहिए। एक शायर ने ठीक कहा–

'जिन्दगी ऐसी बना जिन्दा रहे दिलशाद तूं,
तू न हो दुनिया में तो दुनिया को आए याद तूं।'

रह रह ओळ्यूं आवै जी

● साध्वी संघप्रभा ●

रह रह ओळ्यूं आवै जी क... रह रह
साध्वी मदन सिरी रो गौरव जन-जन गावै जी।
म्हानै याद सतावै जी।।

बीदासर बैदां कुल माता लक्ष्मी कूख उजाली।
इन्दर चन्द जी तात गृहांगण, आई भोर रूपाली।।1।।

संवत बराणुं में जनम्या, संवत् नौ में दीक्षा।
पुर सरदारशहर तुलसी मुख पूरी हुई अभिप्सा।।2।।

महासति लाडां कर लुंचन, रायकंवर सह विचरया।
कानकंवर भगिनी द्वय सेवा, स्वर्ण कसौटी निखरया।।3।।

तन कपड़ै ज्यूं रहया साथ में, साता पूरी दिन्ही।
वसुमतीजी री परिचर्या, बालक सम थे किन्ही।।4।।

करी सदा अग्लान भाव स्यूं मौकै मौकै सेवा।
उण सेवा रा मानो खाया, अन्तिम तक थे मेवा।।5।।

ठिकाणै रा ठाकर बाज्या, म्हारा अति उपकारी।
जद-जद आती मिलण आपस्यूं, कलियां खिलती सारी।।6।।

बा मिसरी सी मधुरी बोली, शिक्षावां हितकारी।
कदे न भूलीजै खिण भर भी, मोहक मूरत थारी।।7।।

प्रेरक जीवन, प्रेरक चिन्तन, करता बात विचारी।
समाधि केन्द्र ने सदा अखरसी, कमी आपरी भारी।।8।।

बूढापै में जाणक थांरो, चक्र वृहस्पति खुलग्यो।
ढालां जोर बणाता गाता, अन्तर दिवलो चसग्यो।।9।।

गुरुदृष्टि आराधन-साधन, सजग नीति में पूरा।
नेड़ा होकर भी म्हे रहग्या, आखिर थांस्यूं दूरा।।10।।

सोच्यो म्हे तो सांडवा स्यूं, पाछा आता रहस्यां।
घणा दिनां तक बीदासर रह, मन री बातां कहस्यां।।11।।

पण सोच्योंड़ी हुई न पूरी, दिल री आस अधुरी।
ऊपर जाकर करज्यो सतिवर, अब संभाल सनूरी।।12।।

भाणेजी सति मंजुयशा री, सखर चाकरी दूजी।
सेवाभावी सतियां सारा, यश शहनाई गूंजी।।13।।

महाश्रमण युग चौविहार, अनशन कर नैया तारी।
महाप्रज्ञ री पुण्यतिथि नै, अन्तिम बाजी मारी।।14।।

वर्ष बहोत्तर भैक्षवगण में, रची ख्यात मनहारी।
धन्य धन्य सति मदन सिरी जी, जावां म्हे बलिहारी।।15।।

हंसता खिलता रहता हरदम, निर्भय निरहंकारी।
'संघप्रभा' सह सोम प्रांशु भी, गावै ढ़ाल गुणां री।।16।।

राय-कान रै सिंघाड़ै री, आ मजबूत निशाणी।
सुख समाधिमय जीवन जीयो, बणगी अमर कहाणी।।17।।

शासन माता कनकप्रभा रो, अमरित मोच्छब निरख्यो।
साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा, विभा लख मनडो हरख्यो।।18।।

साध्वी प्रमुखा तीन, तीन आचार्यां रो बरतारो।
अग्रगण्य भी तीन, स्वयं फिर, याद करे पड़िहारो।।19।।

चौदह वर्षां रहयो सजोरो, बीदाणै थिरवासो।
मघवा समवसरण स्यूं पलट्यो, थान सुथान सूपाशो।।20।।

संवत बंयासी गुरुवारे, बिद ग्यारस बैशाखी।
निशि में दिशि सुरपुर री लिन्ही, दिखला अन्तिम झांकी।।21।।

लय - बाबा बेग पधारो जी क...

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 64वें जन्मोत्सव, 16वें पट्टोत्सव एवं 52वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

तुम ही हो गण सर्वेश्वर

● साध्वी अणिमाश्री ●
● साध्वी सुधाप्रभा ●

शासन दिनकर की किरणें, तुमको आज बधाए रे।
शासन के कल्पतरू का, गौरव गाएं रे।।

1. कल्पतरु की हम कलियां, जन्मोत्सव पर पुलकित हैं,
नव कोंपल, नव पल्लव आज, देखो कितने प्रमुदित हैं।
तेरी शीतल छाया में, मोद मनाएं रे।

2. संघ यशोदा का मोहन, भू पर आज आया था,
माँ नेमा का लाडला, सबके मन को भाया था।
झूमर कुल का उजियारा, आलोक बिछाए रे।।

3. मोहन से मुनि मुदित बने, उदितोदित जीवन तेरा,
दसवें गुरुवर ने तुमको, पहनाया गण का सेहरा।
तेरी यश कीरत गाथा, नभ धरती गाए रे।।

4. अखिलेश्वर, महामंडलेश्वर, विश्वेश्वर हो परमेश्वर,
ब्रह्मा, विष्णु, महेश हो, तुम ही हो गण सर्वेश्वर।
जीवन अर्पित चरणों में, भाग्य सराएं रे।।

लय : जीवन है पानी की बूंद

दमके दुनिया में देखो

● साध्वी शीलयशा ●

दमके दुनिया में देखो, नेमां रो दुलारोऽऽऽ
देश विदेशां थांरों नाम प्रख्यात हो,
हो म्हारां पुण्य प्रपात हो, हो म्हारा शासननाथ हो।।

1. महाश्रमण रे जन्मोत्सव पर, खुशियां रा उठै है ज्वार,
दिव्य पुरुष अवतारी, खोल्या रिद्धि-सिद्धि रा द्वार।
हो गुरुवर! तहदिल स्यूं करां, श्रद्वा सुमनां री बरसात हो।।

2. कोमल चरणां स्यूं चलकर भारत भूमि है नापी,
श्रम बूंदा स्यूं तिमिर भगायो, प्रभुवर है परतापी।
हो गुरुवर! भव-भव उपकार नहीं भूलां, जग विख्यात हो।।
हो गुरुवर! स्माईल मूरत प्यारी, जग विख्यात हो।।

3. जय-जय ज्योतिचरण, जय महाश्रमण, जपो सब नर नारी,
विघ्न विनाशक संकट मोचक, भव-भय भंजक मनहारी।।
हो गुरुवर! जुग-जुग जीओ विजय वरो, झूमर अंगजात हो।।

लय - श्रद्वा स्वीकारो

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
05 मई - 11 मई, 2025

नवम साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के चतुर्थ चयन दिवस पर चारित्रात्माओं के उद्गार

'वर्धापना चंदेरी की चंद्रकांतमणी की'

● साध्वी अनुप्रेक्षाश्री ●

"जन-जन में प्रशंसित, कुशल कर्तव्य की अभिवंदना

अध्यात्मनिष्ठा में स्पंदित, गुरुकृपा की अभिवंदना।

साधना से ज्योतिर्मय आभावलय की अभिवंदना।"

गुरु की कृपा शिष्यों पर बरसती ही रहती है, उस कृपा को अंतस में धारण करना, अंतस में स्थान देना, उसे ठहराना, हर किसी के वश की बात नहीं होती। जैसे सिंहनी का दूध मात्र सोने के पात्र में ही टिकता है, वैसे ही गुरुकृपा अध्यात्मनिष्ठ व्यक्ति में ही टिकती है। जहाँ अध्यात्म निष्ठा नहीं है, वहीं गुरु की कृपा अनेक स्तोत्रों से बह जाती है, छिटक जाती है।

तेरापंथ के इतिहास में ऐसे अनेकों-अनेक महाभाग, पुण्यात्माएं हुईं जिन्होंने गुरु की कृपा को, गुरु के प्रसाद को अपने अध्यात्मबल के आधार पर हजम किया है, पचाया है, परिणामतः उनका जीवन दिव्यगुणों का बोलता संदेश बना है।

मुमुक्षु सविता ने अध्यात्म क्षेत्र में जैसे ही प्रवेश किया, इनकी पुण्याई थी कि आरम्भ से ही गुरुकृपा का प्रसाद प्राप्त होता रहा। अध्यात्मनिष्ठा के बल पर उस दिव्य प्रसाद को वे हर स्थिति में, परिस्थितियों में, हजम करते गए, उसी के अनुरूप उनकी क्षमताएं भी बढ़ती गई। लोहे के टुकड़े में चुम्बकीय गुण समाहित किए जाते हैं तो, उस लोहे के टुकड़े की क्षमताएं बढ़ जाती, वह अपने वजन से 12 गुणा अधिक वजन उठा सकता है, वैसे ही आपश्री ने भी अध्यात्मनिष्ठा में गुरुकृपा को समाहित करके अपनी अंतर्निहित क्षमताओं को उजागर किया है। इसलिये तीनों आचार्यों के युग में आपश्री को नए-नए अवसर प्राप्त होते गए और अनगिनत उपलब्धियों से आपका व्यक्तित्व अलंकृत होता गया।

आचार्यप्रवर द्वारा प्रदत्त सम्पूर्ण साध्वी समाज के सर्वोच्चपद 'साध्वीप्रमुखा' पद के महनीय दायित्व का कुशलता के साथ निर्वहन करते हुए जिस भावविशुद्धि की साधना में आपश्री अहर्निश संलग्न है, उस साधना से निःसृत आपश्री का विलक्षण संरक्षण एवं संपोषण हम सभी साध्वियों को प्राप्त हो रहा है, वह अद्भुत है। आपश्री के उत्कृष्ट संयम और साधना की पवित्र रश्मियां हमारे शारीरिक स्वास्थ्य एवं मानसिक समाधि में योगभूत बन रही हैं।

प्रसंग घाटकोपर का –

4 जनवरी 2024, साध्वीप्रमुखाश्री जी तेरापंथ सभा भवन, अनेक प्रतिष्ठानों और घरों में पगलिए करने हेतु पधारे, मैं भी प्रमुखाश्रीजी के साथ थी। दो-तीन दिनों से मेरे पीठ में दर्द हो रहा था, कुछ उपचार किया पर आराम नहीं मिला। चलते-चलते साध्वीप्रमुखाश्रीजी को मैंने अपने हाथ का सहारा दिया, पहला ही सुअवसर था, आपश्री ने मेरे हाथ का सहारा लिया। एक चमत्कार सा घटित हुआ।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी के उर्जा भरे हाथों के स्पर्शमात्र से, जिस दर्द की अनुभूति मुझे निरंतर हो रही थी, वह दर्द मानों गायब ही हो गया। मैं साध्वीप्रमुखाश्री के प्रति श्रद्धानत हो गई। स्थान पर पहुंचने पर मैंने निवेदन किया— महाराज! आपश्री ने मेरे ऊपर बहुत कृपा कराई, आपश्री ने जैसे मेरी शारीरिक व्याधि को मिटाया है, वैसे ही मेरे आधि, उपाधि को भी दूर कर मुझे परम समाधि प्रदान कराएं। आपश्री ने मेरी बात सुनी और आप मुस्कुरा कर रह गए।

इस धरा पर ऐसे कई व्यक्तित्व हैं, जिनके विचार ही नहीं, बल्कि पूरा जीवन ही प्रेरक एवं प्रभावी होता है, किन्तु वे कंजूस व्यक्ति की तरह स्वयं ही बैंक बैलेन्स बनकर रह जाते है। वे सबके लिए उपयोगी नहीं होते। अमुक-अमुक तक ही सीमित रह जाते हैं। विरले व्यक्तित्व होते हैं, जो सबके लिए, हर स्थिति में, हर समय में, अपनी आभा से सबको प्रभावित करते ही रहते हैं।

शासनमाता की तरह ही आपश्री तेरापंथ महिला मंडल में नवजागृति के प्रति संकल्पित हैं। आधुनिकता के प्रभाव में महिलाओं की छवि जहाँ कहीं धुंधली नजर आती है, वहाँ आपश्री व्यक्तिगत स्तर पर या संगोष्ठी के माध्यम से युगीनशैली में, युगीन संदर्भ के साथ उन्हें मार्गदर्शन प्रदान कराती हैं। जिस तरह मन का रूपान्तरण मौन है, शब्द का रूपान्तरण संगीत है, उसी तरह आपश्री की अमिय प्रेरणा जीवन का रुपान्तरण है।

मुंबई का प्रसंग–

साध्वीप्रमुखाश्रीजी की सन्निधि में कन्या मंडल की बहनों की संगोष्ठी हुई। तब साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने कन्याओं को कल्चर ओरिएंटेशन और कॅरियर ओरिएंटेशन के विषय में चर्चा करते हुए, जीवन को किस रूप में मूल्यवान बनाया जा सकता है, इसकी प्रेरणा दी। साध्वीप्रमुखाश्रीजी की वह प्रेरणा गरम लोहे पर हथोड़े के प्रहार जैसी थी, कई कन्याओं के बहकते कदम संभले। एक कन्या जो अपने संस्कारों से भटक गई थी, अवांछनीय तत्वों को अपनाने के लिए संकल्प-बद्ध थी, पारिवारिक जनों के लाख समझाने के बावजूद भी, अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा समझाने पर भी, वह कन्या अपने जिन्दगी के निश्चय के लिए अटल थी। आखिर उसे प्रमुखाश्रीजी की सन्निधि में लाया गया। ममतामयी साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने उसकी मन की बातें सुनी, फिर वत्सलतापूर्वक उसे प्रेरणा दी। वह प्रेरणा उसके जीवन के रूपान्तरण का कारण बनी।

आपश्री की सहजता में प्रतिबिम्बित उन्नत व्यक्तित्व की गहरी छाप लोगों के मन और मस्तिष्क में अंकित होती ही जा रही है, इसलिये आपके उपपात से लौटने वाले भले ही युवक हो, युवतियां हो, बुजुर्ग हो सबके मन में आत्मतोष एवं प्रसन्नता दिखाई दे रही है। चतुर्थ मनोनयन दिवस पर आपश्री के चरणों में यही निवेदन कर रही हूँ, रहस्यों के वेत्ता, महाशक्तिधर आचार्य श्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि से प्राप्त उर्जा का हम सब में युगों-युगों तक यों ही संप्रेषण करती रहें। मंगलकामना, मंगलकामना।

गुणों का समवाय–साध्वीप्रमुखाश्री

● साध्वी सुमंगलप्रभा ●

सभा में अनेक लोग उपस्थित थे। प्रश्न पूछा गया– सबसे ज्यादा गुणवत्ता किस खाद्य पदार्थ में है? अनेक उत्तर प्राप्त हुए, अंतिम पंक्ति में बैठे एक व्यक्ति ने उत्तर दिया– अनेक खाद्य पदार्थों में अनेक गुण हो सकते हैं। किन्तु मिश्री के गुण बेजोड़ हैं। उसमें उज्ज्वलता, मधुरता और घुलनशीलता है। मैंने भी इन वर्षों में अनुभव किया कि ये गुण सिर्फ मिश्री के ही नहीं कुछ विरले व्यक्तित्वों में भी मिलते हैं। उन विरले व्यक्तित्वों में एक नाम है- नवम् साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी।

आपका जीवन संपूर्ण साध्वीसमाज के लिए प्रेरणा-स्रोत है क्योंकि आपके भीतर मिश्री-सी उज्ज्वलता, वाणी में मधुरता, प्रत्येक सदस्य को अपनापन महसूस कराने वाली मिलनसारिता है। दीक्षा के बाद आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने महत्ती-अनुकंपा करके मुझे आपकी सेवा में नियुक्त किया। यह मेरे परम सौभाग्य का परिणाम है।

मिश्री सी उज्ज्वलता

मुझे आपको बहुत निकट से देखने का अवसर मिला। आप अपने लक्ष्य एवं कर्तव्य के प्रति सदा सजग रहती हैं। आपका पवित्र आभामण्डल आकर्षक प्रतीत होता है। जब भी आपके उपपात में बैठते हैं तो आपका चुम्बकीय व्यक्तित्व समय का अनुभव ही नहीं होने देता है। आपका मन निर्मल दर्पणवत् है। जो छवि भीतर है वही बाहर है।

एक दिन आपने साहित्य समिति को प्रदत्त संदेश एक रजिस्टर के केवल खाली कवर में रखा। बाद में मैंने उस कवर को फाड़ दिया। आपने मुझसे संदेश मांगा पर वह मिला नहीं। आपने कहा— मैंने इस रजिस्टर में ही निश्चित रूप से रखा था। मेरी चिंता बढ़ गई। क्या करूं? मुझसे गलती हो गई। लेकिन आश्चर्य इस बात का था, वो पत्र कहीं और मिल गया। मैंने तुरंत वो पत्र साध्वीप्रमुखाश्रीजी को दिया। पत्र मिलते ही साध्वीप्रमुखाश्री जी बहुत ही प्रसन्न हुए। आपने मुझसे खमतखामणा किया।

इतना ही नहीं, साध्वीप्रमुखाश्री जी ने 1 दिन छः विगयवर्जन का प्रायश्चित स्वीकार किया। इस बात से स्पष्ट जाना जा सकता है कि आपके भीतर पवित्रता और पापभीरूता है। पापभीरू व्यक्ति ही प्रायश्चित स्वीकार करता है और अपनी उज्ज्वलता को किंचित भी आंच नहीं आने देता है।

मिश्री सी मधुरता

सरस्वती स्वरूपा साध्वीप्रमुखाश्री जी की वाणी में मधुरता है। आपकी वाणी लोगों के मन को लुभा रही है। आपके मंद, मधुर, मंत्र मुग्ध करने वाले भाषा वर्गणा के पुद्गल कर्णप्रिय लगते हैं। मधुरता भरी कोमल वाणी आगंतुक के जख्म पर मरहम का काम करती है। कोई भी साध्वी हो या श्रावक-श्राविका आपके पास आकर अपनी समस्या रखते हैं, आप उसे बड़े मनोवैज्ञानिक ढंग से और मधुरता से समझाती हैं। उसकी आधी समस्या का समाधान तो आपकी सन्निधि में ही अनुभव करने लग जाते हैं। हम गुरुकुलवासी एवं बहिर्विहारी प्रायः साध्वियों ने यह अनुभव किया कि आपका मृदु अनुशासन हमें एक विशेष प्रेरणा देता है। ऐसा ही एक प्रसंग सन् 2004 सूरत चातुर्मास में घटित हुआ। आपश्री ने फरमाया- जो साध्वियां अर्हत् वंदना में जितनी देरी से उपस्थित होगी उन्हें उतने मिनट खड़े-खड़े अर्हत् वन्दना करनी है।

सभी साध्वियों ने साध्वीप्रमुखाश्री जी की बात को सहजता से स्वीकार किया और पूरे चातुर्मास में पूर्ण सजगता का परिचय दिया। कभी किसी कारणवश साध्वियां अनुपस्थित रहती तो पूरी अर्हत् वंदना आपके कक्ष में आकर प्रायश्चित स्वरूप खड़े-खड़े अर्हत् वंदना करती।

एक दिन आपने प्रशिक्षण रूप फरमाया— आप सभी अर्हत् वंदना में उपस्थित होते हैं किंतु अर्हत् वंदना का भावपूर्वक उच्चारण नहीं करते। कभी नींद, कभी बातें, तो कभी मौन। अर्हत् वंदना हमेशा उच्चारण पूर्वक करनी चाहिए। इसे ऐसे ही न समझें। प्रभु के गुणगान निष्फल नहीं जाते। इस प्रकार मधुरता से एवं मनोवैज्ञानिक ढंग से दिया जाने वाला प्रशिक्षण सहज ही सबके हृदयंगम हो जाता है।

मिश्री-सी घुलनशीलता

यह एक ऐसा सद्गुण है जो एक दूसरे को जोड़ता है, अपनत्व भरे वातावरण में। जैसे- दूध में मिश्री एकरूप बन जाती है वैसे ही मिलनसार व्यक्ति किसी के भी साथ एडजस्ट हो जाता है। हमने नवम् साध्वीप्रमुखाश्री में देखा – जो भी छोटा, बड़ा, बालक, वृद्ध आपके श्री चरणों में पहुंचा है वो धन्यता का अनुभव किए बिना नहीं रहता। प्रत्येक साध्वी के साथ आत्मीयता का व्यवहार और मिलनसार व्यवहार को देखकर कई बार साध्वियां कहती हैं—

महाराज! आप कितने सहज, सरल हैं। छोटी साध्वियां भी आपके साथ बड़ी सरलता से बात कर पाती हैं और बड़ी साध्वियां भी आपके साथ बड़ी सहज रहती हैं। आपकी यह ऋजुता, व्यवहार कुशलता साध्वी समाज के दिलो-दिमाग में छाई हुई है। जैसे मिश्री इन गुणों से सम्पन्न होने के साथ-साथ ठंडक प्रदान करती है, और शक्तिवर्धन भी करती है। वैसे ही आप भी साध्वी-समाज का ताप-संताप हरती हैं। छोटी साध्वियों को विकास के सुअवसर प्रदान करती हैं। छोटी साध्वियों को महाप्रज्ञ-श्रुताराधना, तत्त्वज्ञान, रंगाई, सिलाई आदि कार्यों में प्रेरित कर उनकी शक्ति को सफलता का रूप देती हैं।

इस प्रकार साध्वियों के हित व विकास के लिए एवं साधना पक्ष को मजबूत बनाने के लिए सतत चिंतन चलता रहता है। इन सब सद्गुणों से ऊपर कहूं तो पूरा साध्वी समाज अनुभव करता है कि आप अप्रमत्तता की मिसाल हैं। आपका हर एक पल प्रमाद किए बिना रहता है – या तो आप स्वाध्याय, जप में लीन रहती हैं या लेखन कार्य में लीन हो जाती हैं और जो भी आपके दर्शन करते आता है उनके आध्यात्मिक उत्थान के लिए समय प्रदान कराते हैं।

आपका मिश्रीवत जीवन हम सबके लिए कल्याणकारी, हितकारी हो, यही मंगलकामना।

आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष

आगामी आषाढ शुक्ला त्रयोदशी तदनुसार 8 जुलाई 2025 को जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के आद्यअनुशास्ता परम पूज्य आचार्यश्री भिक्षु के जन्म त्रिशताब्दी वर्ष का शुभारंभ हो रहा है। यह वर्ष जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के लिए एक महत्त्वपूर्ण वर्ष है। इस वर्ष के समायोजन की रुपरेखा यहां प्रस्तुत है-

नाम : भिक्षु चेतना वर्ष

शुभारंभ : वि.सं. 2082 आषाढ शुक्ला त्रयोदशी, 8 जुलाई 2025

संपन्नता : वि.सं. 2083 आषाढ शुक्ला त्रयोदशी

पावन निर्देशन : युगप्रधान परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण

चरण, महाचरण एवं अन्य आयोजन

प्रथम चरण (शुभारंभ)– वि.सं. 2082 आ. शु. 13-15, 8-10 जुलाई 2025, प्रेक्षा विश्व भारती, अहमदाबाद

द्वितीय चरण– वि.सं. 2082 भाद्रपद शुक्ला 11-13, 3-5 सितम्बर 2025, प्रेक्षा विश्व भारती, अहमदाबाद

महाचरण (कंटालिया प्रवास)– वि.सं. 2082 पौष कृष्णा 11 से पौष शुक्ला 7, 15-27 दिसम्बर 2025, कंटालिया

तृतीय चरण–

वि.सं. 2082 माघ शुक्ला 11-13/14, 29-31 जनवरी 2026, छोटी खाटू

चतुर्थ चरण (संपन्नता)– वि.सं. 2083 आषाढ शुक्ला 11-13, लाडनूं

1. यथासंभवतया सामान्यतया गुरुकुलवास व बाहर प्रत्येक शुक्ला 13 के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के प्रवचन निर्धारित विषयों पर हों। निर्धारित तिथियां एवं विषय इस प्रकार हैं-

8 जुलाई 2025	वि.सं. 2082	आषाढ शुक्ला 13	आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष शुभारंभ समारोह
9 जुलाई 2025	वि.सं. 2082	आषाढ शुक्ला 14	आचार्य भिक्षु द्वारा रचित संविधान
10 जुलाई 2025	वि.सं. 2082	आषाढ पूर्णिमा	तेरापंथ का उद्भव
7 अगस्त 2025	वि.सं. 2082	श्रावण शुक्ला 13	आचार्य भिक्षु की अनुशासन शैली
3 सितम्बर 2025	वि.सं. 2082	भाद्रपद शुक्ला 11	तेरापंथ तब और अब
4 सितम्बर 2025	वि.सं. 2082	भाद्रपद शुक्ला 12	तब तक तेरापंथ चलेगा
5 सितम्बर 2025	वि.सं. 2082	भाद्रपद शुक्ला 13	आचार्य भिक्षु के जीवनकाल के अंतिम भाद्रपद महीने की शिक्षाएं
5 अक्टूबर 2025	वि.सं. 2082	आश्विन शुक्ला 13	दान : एक विश्लेषण
3 नवम्बर 2025	वि.सं. 2082	कार्तिक शुक्ला 13	दया : एक विश्लेषण
3 दिसम्बर 2025	वि.सं. 2082	मार्गशीर्ष शुक्ला 13	मिथ्यात्वी की करणी : एक विश्लेषण
1 जनवरी 2026	वि.सं. 2082	पौष शुक्ला 13	आचार्य भिक्षु की समझाने की शैली (सात दृष्टान्त)
29 जनवरी 2026	वि.सं. 2082	माघ शुक्ला 11	चोर का दृष्टान्त : अध्यात्म का वृत्तान्त
30 जनवरी 2026	वि.सं. 2082	माघ शुक्ला 12	कषायी भी बने अकषायी
31 जनवरी 2026	वि.सं. 2082	माघ शुक्ला 13/14	कुशील से सुशील की ओर
1 मार्च 2026	वि.सं. 2082	फाल्गुन शुक्ला 13	साध्य साधन शुद्धि
	वि.सं. 2083	चैत्र शुक्ला 13	भगवान महावीर और आचार्य भिक्षु
	वि.सं. 2083	वैशाख शुक्ला 13	पुण्य बंध: एक विश्लेषण
	वि.सं. 2083	प्र. ज्येष्ठ शुक्ला 13	आश्रव का जीवत्व : एक विश्लेषण
	वि.सं. 2083	द्वि. ज्येष्ठ शुक्ला 13	अल्प पाप, बहु निर्जरा
	वि.सं. 2083	आषाढ शुक्ला 11	आचार्य भिक्षु का ज्ञान वैभव
	वि.सं. 2083	आषाढ शुक्ला 12	आचार्य भिक्षु का साहित्य संसार
	वि.सं. 2083	आषाढ शुक्ला 13	आचार्य भिक्षु त्रिशताब्दी वर्ष समापन समारोह

महाचरण के दौरान यथासंभवतया प्रत्येक दिन आचार्य भिक्षु से संबंधित विषयों पर प्रवचन आदि हो सकेंगे।

2. यथासंभवतया प्रत्येक शुक्ला 13 को रात्रि में आंशिक धम्म जागरणा का आयोजन किया जा सकता है। सिरियारी में समय की अवधि यथानुकूलता रह सकती है।

जप और तप

1. व्यक्तिगत रुप में 'ॐ भिक्षु-जय भिक्षु' का सवा लाख जप यथेष्ट किया जा सकता है।

2. प्रत्येक शुक्ला 13 को उपवास, एकासन, विगयवर्जन आदि यथेष्ट तप किया जा सकता।

स्वाध्याय

1. इस वर्ष तेरापंथ धर्मसंघ में विशेषतया 'भिक्खु जस रसायन' तथा 'भिक्षु विचार दर्शन' का यथासंभव स्वाध्याय किया जाए।

2. इस वर्ष में भिक्खू दृष्टान्त, अनुकम्पा री चौपाई, नवपदार्थ, व्रताव्रत री चौपाई, विनीत-अविनीत री चौपाई, इंद्रियवादी री चौपाई, मिथ्यात्वी री करणी- इन सात ग्रंथों का वाचन भी किया जा सकता है।

3. अग्रांकित पुस्तकों का भी यथासंभवतया स्वाध्याय किया जा सकता है-

- भिक्षु वाणी - आचार्य महाश्रमण
- आचार्य भिक्षु की अनुशासन शैली - साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा
- आचार्य भिक्षु - शासन गौरव मुनि बुद्धमल
- ऐसे थे भिक्षु - मुनि मोहनलाल 'आमेट'
- आचार्य भिक्षु के विचारों की प्रासंगिकता - मुनि महेन्द्रकुमार

4. श्रावक समाज में तेरापंथ प्रबोध कंठस्थ करने का भी यथासंभव क्रम चले।

5. तेरापंथ प्रबोध पर आधारित व्याख्यान प्रवचन भी किया जा सकता है।

दायित्व

1. इस वर्ष से संबंधित अपेक्षित योजना निर्माण, क्रियान्वयन, व्यवस्थापन, संपर्क, प्रचार-प्रसार आदि का दायित्व जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा का रहेगा।

2. गुरुकुलवास में चारों चरणों और महाचरण के आयोजन का दायित्व आयोजन क्षेत्र की प्रवास व्यवस्था समिति का रहेगा। अपेक्षानुसार तेरापंथी महासभा से परामर्श व पथदर्शन प्राप्त किया जा सकता है और महासभा भी यथापेक्षा उन्हें निर्देशन-इंगित दे सकती है।

3. गुरुकुलवास में अपेक्षानुसार कोई संगोष्ठी आदि आयोजित करनी हो तो प्रवास व्यवस्था समिति द्वारा उसका आयोजन किया जा सकता है।

4. गुरुकुलवास से बाहर में आयोज्य कार्यक्रमों का दायित्व स्थानीय तेरापंथी सभा का रहेगा।

साभार : विज्ञप्ति - वर्ष 31, अंक 4 (11-17 अप्रैल 2025)

जब तक जल सुरक्षित है, तब तक कल सुरक्षित है

गांधीनगर, बेंगलुरू।

जल जागरूकता अभियान के अंतर्गत 'हर बूंद अनमोल' पोस्टर का अनावरण कर्नाटक के राज्यपाल थावरचंद गहलोत द्वारा किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा - जितना हम पानी बचाएंगे, भविष्य उतना ही सुरक्षित रहेगा। जब तक जल सुरक्षित है, तब तक कल सुरक्षित है।

तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष रिजु डूंगरवाल एवं अन्य पदाधिकारियों ने राज्यपाल से वार्तालाप के दौरान मंडल द्वारा किए गए आध्यात्मिक एवं सामाजिक कार्यों की जानकारी चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत की। राज्यपाल ने तेरापंथ महिला मंडल गांधीनगर द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे प्रयास समाज को नई दिशा और पहचान देते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि महिलाएं परिवार की जिम्मेदारी निभाते हुए आत्मनिर्भर बनें, निडर होकर स्वयं की सुरक्षा करें और अपनी संस्कृति को न भूलें। उन्होंने अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए सेवा-कार्य करते रहने की प्रेरणा दी।

राज्यपाल ने विशेष रूप से कैंसर अवेयरनेस अभियान की प्रशंसा की, जो पिछले एक वर्ष से पुलिस हेडक्वार्टर, स्पर्श हॉस्पिटल, हिमांशु कॉलेज एवं विभिन्न फैक्ट्रियों में चलाया गया। इस अभियान के अंतर्गत डॉक्टर्स द्वारा प्रशिक्षण दिया गया निःशुल्क स्वास्थ्य जांच करवाई गईं।

'डिक्लटर एवं डोनेशन ड्राइव' के अंतर्गत महिला मंडल ने असहायों को भोजन, वस्त्र आदि वितरित कर सहयोग प्रदान किया, जिसे राज्यपाल ने एक सराहनीय प्रयास बताया। उन्होंने मंडल के सभी कार्यों की प्रशंसा करते हुए मंगलकामनाएं प्रेषित कीं। इस अवसर पर तेरापंथ सभा के पूर्व संगठन मंत्री प्रकाश मांडोत ने मंडल को सक्रिय सहयोग प्रदान किया। उपस्थित प्रमुख पदाधिकारियों में अध्यक्ष रिजु डूंगरवाल, उपाध्यक्ष लक्ष्मी बोहरा, लता गादिया, सह-मंत्री वीणा पोरवाल तथा प्रचार-प्रसार मंत्री संगीता आंचलिया सम्मिलित थीं।

प्रेक्षा ध्यान, जीवन-विज्ञान और साहित्य के महान आचार्य को 16वें महाप्रयाण दिवस पर विविध कार्यक्रम

चांदोतारा, उड़ीसा

आचार्य श्री महाप्रज्ञ का 16वाँ महाप्रयाण दिवस डॉ. समणी ज्योतिप्रज्ञा जी एवं डॉ. समणी मानसप्रज्ञा जी के सान्निध्य में श्रद्धाभाव से मनाया गया। समणी ज्योतिप्रज्ञा जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी की वाणी मधुर, विचार गहन और दृष्टि अत्यंत व्यापक थी। उन्होंने संयम, सेवा, सच्चाई और नैतिकता के पथ पर चलने की प्रेरणा दी। समणी जी ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के शब्दों को उद्धृत करते हुए कहा - 'जब तक हम भीतर की यात्रा नहीं करेंगे, तब तक बाहर की कोई मंज़िल सच्ची मंज़िल नहीं होगी।' इस अवसर पर महासभा आंचलिक प्रभारी छत्रपाल जैन, होम्योपैथिक चिकित्सक सोहन जैन एवं गणमान्य व्यक्तियों के साथ महिला मंडल, ज्ञानशाला के बच्चे तथा चांदोतारा के युवक-युवतियों ने सक्रिय सहभागिता निभाई। कार्यक्रम में भावपूर्ण कव्वाली प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. समणी मानसप्रज्ञा जी द्वारा किया गया।

कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली

तेरापंथ सभा, दक्षिण दिल्ली के तत्वावधान में साध्वी कुन्दनरेखा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाप्रज्ञ के 16वें महाप्रयाण दिवस पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन श्रद्धासिक्त वातावरण में संपन्न हुआ। साध्वी कुन्दनरेखा जी ने कहा - आचार्य महाप्रज्ञ विरल महापुरुष थे, जिनका जीवन मानवता के लिए वरदान बन गया। जीवन विज्ञान और प्रेक्षाध्यान जैसे अवदानों से उन्होंने सृष्टि के कण-कण को आलोकित किया। वे पांव-पांव चलने वाले यायावर और जन-जन के पथदर्शक थे। उनकी साधना, लेखनी और दर्शन आज भी प्रेरणा के स्रोत हैं। उन्होंने कहा कि सेवा, सहनशीलता, स्वास्थ्य, श्रम और संयम को आचार्यश्री ने सफल जीवन का मूलमंत्र बताया और इन्हीं सूत्रों के आधार पर अनेक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया।

साध्वी सौभाग्ययशा जी ने आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन की ऋजुता, विनम्रता और समर्पण को रेखांकित करते हुए कहा कि उनका सम्पूर्ण जीवन करुणा और साधना का साकार उदाहरण रहा। उन्होंने छोटे से गांव टमकोर से उठकर विश्व संत का स्थान प्राप्त किया।

सभा के पूर्व अध्यक्ष गोविंद बाफना, दक्षिण दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष संजय चौरडिया, अरविंद दुगड़ और हीरालाल गेलड़ा ने आचार्य महाप्रज्ञ को 'मानवता के आलोक पुंज' की संज्ञा दी। कार्यक्रम की शुरुआत रोमी दुगड़, विमल जैन, मनीषा जैन, ताराबाई गेलड़ा और अनिता जैन द्वारा 'चैत्य पुरुष जग जाए' गीत के मंगलाचरण से हुई। राजेश भंसाली और चेतना भंसाली ने स्वरचित कविताओं से वातावरण को भावविभोर किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी कल्याणयशा जी ने किया। उन्होंने कहा, "आचार्य महाप्रज्ञ तेरापंथ की तकदीर और आधुनिक युग में अवतरित महावीर थे। अहिंसा यात्रा से लेकर 300 से अधिक पुस्तकों के माध्यम से उन्होंने विश्व का कल्याण किया।"

कार्यक्रम के समापन पर हीरालाल गेलड़ा ने 'कैसी वह कोमल काया रे' गीत के संगान के साथ आभार व्यक्त किया। अंत में 'ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरुवे नमः' के सामूहिक जप व तप की चेतना के साथ आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

समाना मंडी

साध्वी समन्वयप्रभाजी के सान्निध्य में आचार्य श्री महाप्रज्ञ का 16वां महाप्रयाण दिवस अभ्यर्थना समारोह के रूप में समायोजित किया गया। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि नत्थू से आचार्य महाप्रज्ञ बनने तक की यात्रा विकास की एक ऊर्जस्वित यात्रा रही है। उनकी प्रज्ञा ने नये आयाम प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने युगीन समस्याओं को गहराई से समझा और उनके समाधान की दिशा भी दिखाई। उनका साहित्य एक महासूर्य के समान है—जिसकी एक किरण भी यदि किसी को प्राप्त हो जाए तो वह जीवन का कल्याण कर सकती है। आचार्य महाप्रज्ञ प्रेक्षाध्यान के प्रयोगधर्मी आचार्य थे। उन्होंने वर्षों तक दिव्य साधना की और विभिन्न मंत्रों व आसनों के माध्यम से एक ऐसी शक्ति का जागरण किया, जो विश्वशांति का मंत्र बन गई। साध्वी चारुलताजी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर सभा के अध्यक्ष सतपाल जैन, मंत्री शिव कुमार जैन, जिनेन्द्र, निर्मल एवं खेताराम ने अपने विचार प्रस्तुत किए। किशोर मंडल से मुदित तथा महिला मंडल से नीलम जैन ने भी अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम का मंगलाचरण सभा के सहमंत्री गौरीशंकर जैन द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी संयमप्रभा जी द्वारा किया गया।

नोखा

सदी के महान दार्शनिक, योगीराज संत एवं युग पुरुष आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के 16वें महाप्रयाण दिवस के अवसर पर एक भावपूर्ण समारोह 'शासन गौरव' साध्वी राजीमती जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर साध्वी राजीमती जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी इस युग के महामनस्वी, महायोगी एवं राजसंत थे। उन्होंने करुणा, दया, सत्य, अहिंसा और दार्शनिकता से परिपूर्ण जीवन जिया। ध्यान-साधना के क्षेत्र में उन्होंने प्रेक्षाध्यान जैसे विलक्षण प्रयोग का आविष्कार किया, जो आज वैश्विक स्तर पर आत्मिक उन्नयन का माध्यम बन चुका है। वे एक विलक्षण, अलबेले, सिद्ध पुरुष थे। साध्वी प्रभातप्रभा जी एवं साध्वी पुलकितयशा जी ने आचार्य महाप्रज्ञ जी को महान आचार्य बताते हुए अपने भाव प्रकट किए। कवि इन्द्रचन्द बैद ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ प्रेक्षाध्यान के आविष्कारक एवं महान प्रयोगकर्ता थे। इस अवसर पर सुनील बैद, सुनील भूरा एवं सीमा घीया ने भी अपने विचार रखे। महिला मंडल अध्यक्ष सुमन मरोठी ने महिला मंडल के साथ गीतिका के माध्यम से आचार्यश्री को श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन मंजु देवी बैद द्वारा किया गया।

गंगाशहर

तेरापंथ धर्म संघ के 10वें आचार्य, युगद्रष्टा संत आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 16वाँ महाप्रयाण दिवस बोथरा भवन, गंगाशहर में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के सान्निध्य में श्रद्धा और भक्ति भाव से मनाया गया। मुनिश्री ने आचार्यश्री को योगीराज, करुणामूर्ति और ज्ञान-योग के धनी संत बताते हुए कहा कि उनका सभी के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध था। उनके विचारों और साहित्य से प्रभावित होकर अनेक विद्वान, चिंतक, सरकारी अधिकारी, डॉक्टर, वकील, इंजीनियर आदि ने अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन किए। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी. जे. अब्दुल कलाम उनके अनन्य भक्तों में थे। मुनिश्री ने आगे कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी ज्ञान के अहंकार से रहित, विकारमुक्त और एक सच्चे योगीराज थे। आचार्य तुलसी ने उन्हें युवाचार्य के रूप में नियुक्त किया था, और दोनों का संबंध 'दो शरीर, एक आत्मा' के समान था। उनमें विद्या, विनय, विवेक और समर्पण का अनुपम संगम था। मुनि श्रेयांशकुमार जी ने कविता और गीतिका के माध्यम से भावांजलि अर्पित की। मुनि प्रबोधकुमार जी ने आचार्यश्री की सरस्वती-संपन्न वाणी और साहित्य के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि उनकी रचनाएं मौलिक और जीवन परिवर्तक थीं। आगम साहित्य पर उनकी टीकाएं और भाष्य आज भी जन-जन को मार्गदर्शन दे रहे हैं।

मुनि विमलविहारी जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी ने प्रेक्षा ध्यान के माध्यम से तनावमुक्त जीवन का मार्ग दिखाया। मुनि नमिकुमार जी ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि 2007-2009 के बीच की सेवाओं ने उनके भीतर वैराग्य के बीजों का अंकुरण किया, जो 2016 में आचार्य श्री महाश्रमण जी से दीक्षा के रूप में परिणत हुआ। मुनि मुकेशकुमार जी ने गीतिका का संगान किया। इससे पूर्व प्रातः काल चौरडिया चौक स्थित 'महाप्रज्ञ स्तंभ' के समीप मुनि कमलकुमार जी के सान्निध्य में विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ। 'ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरवे नमः' के जाप के साथ प्रारम्भ हुए कार्यक्रम में मुनिश्री ने आचार्यश्री द्वारा प्रदत्त प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान और सत् साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान किया। उन्होंने जप, तप और स्वाध्याय के महत्व पर बल देते हुए आत्मिक उन्नति की प्रेरणा दी। इसी कड़ी में महाप्रज्ञ प्रेक्षा योग आरोग्य केंद्र द्वारा आयोजित दो दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा शिविर का शुभारंभ नथमल जुगराज बणोट के निवास स्थान पर मुनिश्री के मंगलपाठ के साथ हुआ। मुनिश्री ने भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं ध्यान योग की उपयोगिता को रेखांकित किया। थेरापिस्ट सत्य प्रकाश सांखला ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। भावांजलि सत्र में अनेक वक्ताओं ने कविता, मुक्तक, गीतिका और वक्तव्यों के माध्यम से आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

महरौली

महाप्रज्ञ भवन में तेरापंथी सभा, दिल्ली द्वारा आयोजित महाप्रज्ञ महाप्रयाण समारोह को संबोधित करते हुए 'शासनश्री' साध्वी सुव्रता जी ने कहा— आचार्य महाप्रज्ञ का व्यक्तित्व स्वयं में एक प्रेरणा था, जो दिव्यता का दर्शन और सत्यता का स्पर्श कराता था। वे अतीत और अनागत को आलोकित करने वाले एक ज्योति-स्तंभ थे। उनके यशस्वी कर्तृत्व ने युगधारा को मोड़ने के लिए नई दृष्टि, नई सोच और नया स्वर प्रदान किया। उनकी सृजनात्मक चेतना ने ज्ञान का अकूत भंडार दिया। उनके तेजस्वी नेतृत्व ने अनगढ़ पत्थरों को प्रतिमा का आकार दिया। उन्होंने तेरापंथ संघ को हिमालय जैसी ऊंचाई और सागर जैसी गहराई प्रदान की।

'शासनश्री' साध्वी सुमनप्रभा जी ने कहा— आचार्य महाप्रज्ञ ने एक छोटे से ग्राम में जन्म लिया था। किसी ने भी यह कल्पना नहीं की थी कि यह शिशु अध्यात्म जगत के शिखर पर धर्मध्वजा फहराएगा, एक दिन मूर्धन्य साहित्यकार बनेगा और आगम का कुशल भाष्यकार सिद्ध होगा। लेकिन आचार्य तुलसी की सन्निधि में रहकर उन्होंने यह सभी विशेषताएं अर्जित कीं।

साध्वी कार्तिकप्रभाजी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने पुरुषार्थ की डोर और विनम्रता की पतंग से नील गगन की ऊंचाइयों को छू लिया। साध्वी चिंतनप्रभाजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा— जन-जन के जीवन को उजालों से भरने वाले, हर समस्या का समाधान देने वाले, कालूगणी की कालजयी रचना का नाम 'महाप्रज्ञ' था। कार्यक्रम का शुभारंभ दक्षिण दिल्ली के महिला मंडल ने किया।

तेरापंथ महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़, दिल्ली तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, कल्याण परिषद के संयोजक एवं अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी के. सी. जैन, दिल्ली तेरापंथ सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, अणुव्रत समिति के मंत्री राजेश बैंगानी तथा तेरापंथ युवक परिषद की ओर से करुण सेठिया ने आचार्य महाप्रज्ञ के चरणों में श्रद्धा समर्पित की। कार्यक्रम का कुशल संयोजन महरौली तेरापंथ भवन के व्यवस्थापक संदीप डूंगरवाल ने किया।

2624वें भगवान महावीर जन्म कल्याणक पर श्रद्धासिक्त कार्यक्रम

सांडवा

साध्वी संघप्रभाजी के सान्निध्य में भगवान महावीर का 2624वाँ जन्मकल्याणक दिवस सांडवा में अत्यंत श्रद्धा व भव्यता के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दिलीप डागा द्वारा प्रस्तुत सुमधुर गीतिका से हुआ। साध्वी संघप्रभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा— भगवान महावीर का जन्म उस युग में हुआ जब मानवता हिंसा और विषमता की आग में जल रही थी। धर्म जातिवाद और संप्रदायवाद की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। क्षत्रिय कुण्डग्राम के महाराज सिद्धार्थ के राजमहलों में माता त्रिशला के गर्भ से जन्मे बालक वर्धमान ने कठोर तपस्या द्वारा महावीरत्व को प्राप्त किया। साध्वी जी ने महावीर के सिद्धांतों— अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत— की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उन्होंने विश्व को शांति का अमूल्य संदेश दिया। इस पावन अवसर पर बजरंगी भंसाली, संतोष देवी, जया भंसाली, छाजेड़ आदि वक्ताओं ने भी वक्तव्य में भगवान महावीर के जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। तेरापंथ महिला मंडल ने 'महावीर भगवान थांरो ध्यान धरांजी' का संगान किया। ज्ञानशाला के बच्चों एवं कन्या मंडल द्वारा 'बधाई-बधाई राजमाता बधाई, नंदन जनम पर खुशियाँ हैं छाई' जैसे भावपूर्ण कार्यक्रम प्रस्तुत किए। साध्वी सोमश्रीजी ने भगवान महावीर के 'वर्धमान रूप' का चित्रण करते हुए उन्हें केवल वीर नहीं बल्कि महावीर बताया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने किया तथा आभार ज्ञापन सुरेन्द्र भंसाली ने किया।

नागपुर

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, नागपुर द्वारा भगवान महावीर का 2624वां जन्म कल्याणक दिवस बड़े ही श्रद्धा, उत्साह और सामाजिक समरसता के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत तेरापंथ सभा अध्यक्ष विजय रांका एवं समाज के अन्य पदाधिकारियों द्वारा जैन ध्वज फहराकर की गई। इस अवसर पर भगवान महावीर के आदर्शों को स्मरण करते हुए सभी को शुभकामनाएं प्रेषित की गईं। इसके पश्चात आयोजित शोभायात्रा में तेरापंथ समाज के श्रावक-श्राविकाओं के साथ-साथ अन्य जैन संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सभी श्रद्धालु भगवान महावीर के गुणों का गान करते हुए और जयघोष करते हुए शहर के विभिन्न क्षेत्रों से होते हुए तेरापंथ भवन पहुँचे। शोभायात्रा के माध्यम से शहरवासियों को अहिंसा, संयम और शांति का संदेश दिया गया, जो भगवान महावीर के मूल सिद्धांत हैं। शोभायात्रा में शामिल श्रद्धालु पारंपरिक वेशभूषा में सज्जित थे, और वातावरण भगवान महावीर के भक्ति-भाव में सराबोर था। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष विजय रांका, तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री मीनू बोथरा, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष नितेश छाजेड़, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम अध्यक्ष राहुल कोठारी एवं समाज के अनेक कार्यकर्ताओं की गरिमामयी उपस्थिति ने आयोजन की शोभा बढ़ाई। आयोजन को सफल बनाने में समाज के सभी वर्गों का सक्रिय सहयोग रहा। तेरापंथ युवक परिषद के मंत्री अंकुर बोरड़ ने कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी और सभी प्रतिभागियों का आभार प्रकट किया।

रायसिंहनगर

अहिंसा के उत्कृष्ट साधक भगवान महावीर ने पशु बलि, दास प्रथा, जातिवाद व धर्म के नाम पर हो रहे अन्यायों, कर्मकांडों व आडंबरों को अतात्विक बताते हुए उनका घोर विरोध किया। ये शब्द आचार्य श्री महाश्रमण के सुशिष्य मुनि सुमति कुमार ने नवनिर्मित तेरापंथ भवन में महावीर जयंती समारोह के दौरान कहे। उन्होंने कहा कि भगवान महावीर के संघ में चारों वर्णों के लोग दीक्षित हुए। उन्होंने दलितों को भी गले से लगाया। आज हम महावीर को मानते हैं, उनके गुणगान करते हैं, जरुरत है उनके सिद्धांतों पर चलने की। प्रमुख वक्ता डॉ. धनपत जैन ने पाँच महाव्रतों का ज़िक्र करते हुए कहा कि आज परिग्रह वृत्ति के कारण हिंसा, चोरी, अपराध व व्याभिचार बढ़ रहे हैं। हमें सजावटी, दिखावटी, बनावटी जीवनशैली को छोड़कर सद्वृत्तियों के द्वारा जीवन का उत्थान करना चाहिए। प्रोफेसर जैन ने कहा कि सादगी का कोई विकल्प नहीं है। विशिष्ट अतिथि प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. मंगत बादल ने कहा कि परिग्रह के कारण आज आम आदमी दुःखी है। अहिंसा के महान साधक भगवान महावीर का अनेकांत का सिद्धांत समूचे विश्व को उनकी महान देन है।

मुनि देवार्य कुमार ने कहा कि हज़ारों वर्ष पूर्व दिए गए भगवान महावीर के उपदेश वर्तमान में भी प्रासंगिक हैं। उनकी शिक्षाओं की उस वक्त से भी ज़्यादा आज जरूरत है। भगवान महावीर ने न केवल लोगों को उपदेश देकर उनका कल्याण किया, अपितु स्वयं भी उन सिद्धांतों को जिया। वे त्रैकालिक व्यक्तित्व के धनी थे। मुनि आगम कुमारजी ने कहा कि भगवान महावीर ने तपस्या, ध्यान व स्वाध्याय को विशेष महत्व दिया। उनके उपदेशों से जनमानस प्रभावित व प्रबुद्ध हुआ। उनके सिद्धांत व शिक्षाएं पीड़ित मानवता के लिए त्राण हैं। सुनीता सेठिया के नेतृत्व में तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने गीतिकाएँ 'भाव भीनी उतारें तेरी आरती' व 'घर घर छायी है खुशियाँ महावीर नाम की' तथा गजसिंहपुर की बहनों ने गीतिका 'ज्योति जगाओ' प्रस्तुत की। तेरापंथ युवक परिषद द्वारा भी गीतिका प्रस्तुत की गई। मंजू जैन, व्याख्याता, रा.बा.उ.मा. वि. रायसिंहनगर ने कहा कि भगवान महावीर की शिक्षाओं से जीवन निर्माण के सूत्र मिलते हैं। सीमा बांठिया, सिद्धार्थ जैन, अनंत जैन, प्राची जैन, साक्षी पिंचा, जयप्रकाश श्यामसुखा, सोनिया गर्ग, जयदेव गोयल व टीपीएफ के डॉ. मुकेश जैन ने अपने विचारों को वक्तव्य, कविताओं एवं गीतिका के माध्यम से अभिव्यक्त किया। ज्ञानशाला के बच्चों ने नमन अंचलिया के निर्देशन में भगवान महावीर के जीवन पर आधारित दो लघु नाटिकाएं प्रस्तुत कीं। पदाधिकारियों एवं विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा प्रमुख वक्ता डॉ. धनपत जैन व विशिष्ट अतिथियों डॉ. मंगत बादल व हड्डी एवं जोड़ रोग विशेषज्ञ डॉ. ओ.पी. अग्रवाल का सम्मान किया गया। प्रभादेवी पटावरी एवं संपत देवी सुराणा ने ज्ञानशाला के बच्चों को पुरस्कृत किया। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। तेरापंथी सभाध्यक्ष रवींद्र जैन ने स्वागत किया एवं सचिव डॉ. संजय बोथरा ने आभार व्यक्त किया। संयोजन प्रदीप बोथरा ने किया।

रायपुर

तेरापंथ युवक परिषद, रायपुर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, रायपुर के माध्यम से रायपुर सकल जैन समाज द्वारा आयोजित भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव समिति - 2025 अंतर्गत आयोजित 16 दिवसीय आयोजन में 3 टेस्ट निःशुल्क प्रदान किए। सोलह दिनों में थाइरोइड, ब्लड शुगर और सीबीसी का कुल 513 लोगों द्वारा लाभ लिया गया। स्टाफ के साथ निर्मल गांधी, निकुंज साचला, वीरेंद्र डागा का विशेष सहयोग रहा।

रोहिणी, नई दिल्ली

जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, रोहिणी के तत्वावधान में भगवान महावीर जन्मकल्याणक के अवसर पर वीर अपार्टमेंट, रोहिणी स्थित जैन स्थानक में भव्य समारोह का आयोजन साध्वी लब्धिप्रभा जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री के मुखारविंद से नमस्कार महामंत्र एवं महावीर स्तुति के साथ हुई। महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया, तथा ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों – ईशान, हर्षित, उदिता और प्रणव – ने कविता, कहानी और गीत की सुंदर प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं एवं तेयुप दिल्ली के कार्यकर्ताओं द्वारा भी गीतिका प्रस्तुत की गई। साध्वी लब्धिप्रभाजी ने भगवान महावीर के जीवन से प्रेरणा लेते हुए संयम, करुणा और आत्म-परिष्कार के मार्ग पर चलने का संदेश दिया। साध्वी सुमेधाश्रीजी ने गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम के दौरान CPS कार्यशाला बैनर का अनावरण भी किया गया।

इस अवसर पर दिल्ली ज्ञानशाला संरक्षक रतन लाल जैन, दिल्ली सभा महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, अणुव्रत न्यास के न्यासी डालम चन्द बैद, रोहिणी सभा अध्यक्ष विजय जैन, मंत्री राजेंद्र सिंघी, पश्चिम विहार सभा अध्यक्ष श्यामलाल जैन, पीतमपुरा सभा अध्यक्ष लक्ष्मीपत भूतोदिया, नांगलोई सभा अध्यक्ष शीशपाल जैन, पालम सभा अध्यक्ष ईश्वर जैन, तेयुप दिल्ली अध्यक्ष राकेश बैंगानी, उत्तरी दिल्ली महिला मंडल मंत्री इंदिरा सुराणा और वीर अपार्टमेंट सभा अध्यक्ष किरणपाल जैन ने अपने विचार प्रकट करते हुए भगवान महावीर के संदेशों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। आभार ज्ञापन रतन लाल जैन द्वारा किया गया। समारोह में रोहिणी सहित विभिन्न क्षेत्रों से आए पदाधिकारी, श्रावक-श्राविकाएं एवं समाजजनों की गरिमामय उपस्थिति रही।

हैदराबाद

तेरापंथ युवक परिषद, हैदराबाद ने नामपल्ली प्रदर्शनी मैदान में जैन सेवा संघ द्वारा आयोजित भगवान महावीर जन्मकल्याणक समारोह में सेवा, संस्कार और संगठन के उद्देश्यों के साथ सक्रिय सहभागिता दर्ज की। परिषद अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा और मंत्री अनिल दुगड़ के नेतृत्व में आयोजित विविध कार्यक्रमों में समाजसेवा व जागरूकता को केंद्र में रखा गया। एमबीडीडी प्रभारी मनोज जैन के संयोजन में आयोजित मेगा रक्तदान शिविर में 55 यूनिट रक्त एकत्र किया गया, जिसमें 15 से अधिक महिलाओं ने पहली बार रक्तदान कर प्रेरणादायक भागीदारी निभाई। तेलंगाना प्रभारी प्रवीण श्यामसुखा के समन्वय में चलाए गए 'Vision for Visionless' नेत्रदान अभियान में सैकड़ों लोगों को जागरूक किया गया एवं कई ने नेत्रदान संकल्प पत्र भरे। इसके साथ ही, अपोलो डेंटल के सहयोग से दंत स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित हुआ। धर्म शिक्षाओं के प्रचार हेतु जैन विश्व भारती साहित्य प्रदर्शनी लगाई गई जिसका संचालन प्रकाश दुगड़ और लक्ष्मीपत डूंगरवाल ने किया। तेरापंथ युवक परिषद की स्थायी पहल होमियो क्लिनिक के स्टॉल का उद्घाटन विजयकुमार बाफना द्वारा किया गया। कार्यक्रम से पूर्व तेयुप सदस्यों ने जैन यूथ क्लब, डायमंड पॉइंट द्वारा आयोजित रैली में उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस आयोजन की सफलता में युवाओं का विशेष योगदान रहा। जैन सेवा संघ अध्यक्ष योगेश सिंघी एवं पदाधिकारियों ने तेयुप टीम के कार्यों की सराहना की।

समदड़ी

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा समदड़ी के तत्वावधान में महावीर भवन में भगवान महावीर का जन्मकल्याणक महोत्सव अत्यंत भव्यता एवं श्रद्धा के साथ मनाया गया। प्रातःकाल भगवान कुंथुनाथ जैन मंदिर से प्रभातफेरी का शुभारंभ हुआ, जो भक्तिभाव से ओतप्रोत वातावरण में महावीर भवन तक पहुंची। सकल जैन समाज ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। महावीर भवन में आयोजित कार्यक्रम में साध्वी अणिमाश्रीजी ने कहा - चेतना के चिन्मय मुंडेर पर अध्यात्म का दीप प्रज्ज्वलित करने वाली महाशक्ति का नाम है—भगवान महावीर। साधना के शिखर पर आरोहण कर शाश्वत आनंद प्राप्त करने वाली सत्ता है—भगवान महावीर। उनका जन्म मानवता के लिए महासूर्य का उदय है। साध्वीश्री ने आगे कहा कि आज आवश्यकता है महावीर को केवल मानने की नहीं, बल्कि महावीर की मानने की पृष्ठभूमि का निर्माण करने की। पूजा, स्तवन, आरती आदि करणीय कर्म हैं, परंतु वर्तमान संदर्भ में महावीर के मूल सन्देश को जीवन में अपनाना ही उनका सच्चा स्मरण होगा। साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा कि भगवान महावीर की समता, ममता और क्षमता हमारे जीवन को दिशा देने वाली प्रेरणा हैं। डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने मंच संचालन करते हुए कहा, "मां त्रिशला और राजा सिद्धार्थ के घर जन्मे वर्धमान ने तप-साधना से 'महावीर' स्वरूप प्राप्त कर जन-जन के आराध्य बन गए।" साध्वी समत्वयशा जी ने सुमधुर गीत के माध्यम से वातावरण को भक्तिभाव से सराबोर किया।

साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने अपने वक्तव्य में भगवान महावीर को अध्यात्म के गौरीशंकर की संज्ञा दी। सभा अध्यक्ष अरुण अब्बानी और प्रकाश मेहता ने अपने विचार व्यक्त किए। समदड़ी महिला मंडल एवं प्रौढ़ बहनों ने भगवान महावीर की स्तुति में मंगल संगान और स्वरलहरियों की प्रस्तुति दी।

रक्तदान शिविर में 351 यूनिट रक्त संग्रहित

उदयपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में आयोजित मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर एवं अनुष्का ग्रुप द्वारा आयड़ स्थित जैन तीर्थ परिसर में विशाल स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में कुल 351 यूनिट रक्त संग्रह किया गया।

यह रक्तदान शिविर स्वर्गीय डॉ. अनुष्का सुराणा की स्मृति में आयोजित किया गया। इस शिविर का उद्‌घाटन अतिरिक्त जिला न्यायाधीश कुलदीप शर्मा, शहर विधायक ताराचंद जैन, डॉ. दीपक माहेश्वरी तथा ओसवाल बड़े साजन सभा अध्यक्ष कुलदीप नाहर द्वारा किया गया।

इस सेवा आयोजन में एनसीसी कैडेट्स, अनुष्का ग्रुप के छात्र-छात्राएं, स्टाफ सदस्य एवं तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर के युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शिविर की एक विशेष उपलब्धि यह रही कि अनुष्का ग्रुप के सचिव एवं अभातेयुप के प्रबुद्ध विचारक राजीव सुराणा, डॉ. रंजना सुराणा सहित 30 युगल जोड़ों एवं तेयुप अध्यक्ष भूपेश खमेसरा तथा मंत्री साजन मांडोत ने एक साथ रक्तदान कर समाज को प्रेरित किया। कार्यक्रम में बेंगलुरु से पधारे मुख्य अतिथि अभातेयुप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पवन मांडोत तथा विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय सहमंत्री लक्की कोठारी ने तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर एवं अनुष्का ग्रुप को इस सेवा कार्य के लिए शुभकामनाएं एवं बधाई दी। रक्तदान के साथ-साथ नेत्रदान जागरूकता अभियान एवं आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के प्रचार-प्रसार हेतु भी विशेष प्रयास किए गए। इस अवसर पर नेत्रदान जागरूकता हेतु पोस्टर का विमोचन भी किया गया।

तेयुप अध्यक्ष भूपेश खमेसरा एवं प्रबंध मंडल टीम ने सभी रक्तदाताओं एवं सहयोगियों का सम्मान किया। अनुष्का ग्रुप के डॉ. एस. एस. सुराणा एवं कमला सुराणा का विशेष अभिनंदन किया गया, जिन्होंने जानकारी दी कि इस शिविर में 100 से अधिक महिलाओं ने रक्तदान किया। उल्लेखनीय है कि यह रक्तदान शिविर तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर द्वारा आयोजित वर्ष 2025 का पाँचवां शिविर रहा। इस अवसर पर तेरापंथ सभा अध्यक्ष कमल नाहटा सहित कई गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। परिषद मंत्री साजन मांडोत ने सभी रक्तदाताओं, अनुष्का ग्रुप एवं अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

पृष्ठ 2 का शेष

स्वाध्याय, सेवा और तप से...

हमारे धर्म संघ में अनेक संस्थाएं हैं जो अच्छा कार्य कर रही हैं। अनेक रूपों में सेवा करने वाले हैं। ज्ञानशाला व उपासक श्रेणी भी है। हमारा धर्म संघ अच्छा विकास करता रहे। आज का कार्यक्रम डीसा में आयोजित हो रहा है। डीसा मुनि शांतिप्रिय जी से जुड़ा क्षेत्र है, यहां की जैन-अजैन जनता में भी धार्मिक विकास होता रहे।

निर्जरा और आत्मा विशुद्धि के लिए हो तपस्या

आचार्यप्रवर के मंगल प्रवचन से पूर्व साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने तप के महत्व को समझाते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति में साध्य को प्राप्त करने के लिए अनेक साधन बताये गये हैं। जैन धर्म में तप को मोक्ष प्राप्ति का, साध्य प्राप्त करने का साधन बताया गया है। आगमों में 10 धर्मों का उल्लेख बताया है, उनमें से एक है तप। मोक्ष मार्ग के चार मार्गों में एक मार्ग है - तप। अक्षय तृतीया का दिन तप से जुड़ा है। इस दिन भगवान ऋषभ ने पारणा किया था। आज अनेक साधु-साध्वियों एवं श्रावक-श्राविकाएं वर्षीतप का पारणा करने उपस्थित हुए हैं। संचित कर्मों को क्षय करने के लिए तप किया जाता है। जन्म-जन्म के संचित कर्मों का तप द्वारा निर्जरण किया जा सकता है। भगवान ने कहा है कि तुम तपस्या व संयम में पुरुषार्थ करो। जिसके द्वारा इंद्रियां व शरीर तप्त होता है, कर्म रजें जल जाती हैं, वह तप है। व्यक्ति भौतिक लक्ष्य के लिए, पौद्‌गलिक सुख के लिए तपस्या न करे। तपस्या मात्र निर्जरा और आत्म विशुद्धि के लिए हो। तपस्या से शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक शांति प्राप्त होती है। तपस्या सबसे बड़ी औषधि है जो शारीरिक बीमारी के साथ भव भ्रमण की बीमारी को दूर करती है। बाह्य तप के साथ आभ्यंतर तप भी जुड़ जाये तो सोने में सुहागा हो जाता है।

साध्वीवर्याजी ने 'अद्भुत तेज तुम्हारा' गीत का सुमधुर संगान किया।

मुख्यमुनि महावीर कुमारजी ने कहा कि भगवान ऋषभ एक महापुरुष थे। उनका अवतरण इस धरती पर हुआ था। उन्होंने 83 लाख पूर्व वर्षों तक गृहस्थ, राजनीतिक जीवन जीया था। लोक व्यवहार को पूर्ण कर भगवान ऋषभ अध्यात्म के पथ पर प्रवर्धमान हो गये। मुख्य मुनि प्रवर ने भगवान ऋषभ के वर्षीतप एवं श्रेयांस द्वारा पारणा के प्रसंग का विवेचन किया।

प्रवास व्यवस्था समिति डीसा के अध्यक्ष विनोद बोरदिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेरापंथ महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने सुंदर प्रस्तुति दी। अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास से शांति कुमार जैन ने तप से होने वाले वैज्ञानिक बदलाव के बारे में विचार रखे।

तीन साध्वीवृंद और चार संतवृंद ने आचार्यश्री के समक्ष अपने वर्षीतप सम्पन्न किए। श्रावक-श्राविकाओं ने आचार्यश्री को ईक्षुरस का दान करते हुए अपना-अपना वर्षीतप सम्पन्न किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

पृष्ठ 3 का शेष

निरंतरता और श्रद्धा के...

जीवन की प्रत्येक क्रिया में ध्यान समाहित होना चाहिए। आगम हमारे लिए 'नंदन वन' के समान हैं, उसमें नियमित भ्रमण करें। तेरापंथ धर्म संघ को भी 'नंदन वन' की उपमा दी गई है।

मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में शासनश्री साध्वी मदनश्रीजी (बीदासर) की स्मृति सभा का आयोजन हुआ। आचार्यश्री ने उनका संक्षिप्त जीवन परिचय प्रदान करने के उपरान्त मध्यस्थ भावना के साथ चतुर्विध धर्मसंघ को चार लोगस्स का ध्यान कराया। इसके उपरान्त मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी, साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी ने भी साध्वीश्रीजी की आत्मा के प्रति मंगलकामना की।

अंत में पूज्यवर ने हाजरी का वाचन करते हुए प्रेरणाएं प्रदान कीं। आचार्यश्री की अनुज्ञा से साध्वी दर्शितप्रभाजी व साध्वी देवार्यप्रभाजी ने लेखपत्र का उच्चारण किया। आचार्यश्री ने साध्वीद्वय को सात-सात कल्याणक बक्सीस किए। तदुपरान्त उपस्थित चारित्रात्माओं ने अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र उच्चरित किया। आचार्यश्री के स्वागत में तीर्थ से संबंधित दीपकभाई डोसी ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

बोलती किताब

दोनों हाथ एक साथ

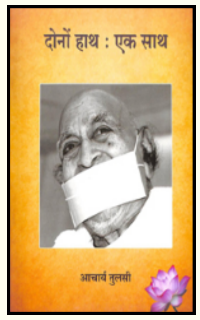

पाथेय-हमारा सबसे बड़ा पाथेय है—अध्यात्म। व्यक्ति स्वयं को समझें, पहचानें, प्राप्त करें और अपने आप में रमण करें—यही अध्यात्म है। शरीर नश्वर है, भौतिक सामग्री नश्वर है, पदार्थ-सापेक्ष सुख भी नश्वर है। अविनश्वर है ज्ञान, दर्शन और चरित्र। अविनश्वर है आत्मा और अविनश्वर है अध्यात्म। जो अविनश्वर है, शाश्वत है, उसी को संजोकर रखना है और उसी दिशा में आगे बढ़ना है।

अध्यात्म के बाद क्रम है धार्मिक संस्कारों का। धर्मसंघ, धर्माचार्य और साधु-साध्वियो के द्वारा जो धार्मिक संस्कार मिलते हैं, उन्हें भी सहेजकर रखना बहुत जरूरी है। क्योंकि उनके शिक्षण-प्रशिक्षण से जीवन बनता है और विकास की नयी दिशाएं उद्घाटित होती हैं। धर्मसंघ और संघपति के प्रति घनीभूत निष्ठा कभी भी नहीं चुकने वाला पाथेय है। कैसी निष्ठा? जैसे मजीठ का रंग। हल्दी का रंग कच्चा होता है। वह थोड़ी सी धूप लगते ही उड़ जाता है। मजीठ का रंग कपड़ा फट जाने पर भी उससे दूर नहीं होता। ऐसे रंग में रंगी हुई निष्ठा ही जीवन-यात्रा में सम्बल बन सकती है। परिवार में समभाव का विकास बहुत आवश्यक है। इसका सबसे पहला प्रयोग सन्तति के लिए हो। घर में लड़का हो या लड़की, उनकी खानपान आदि मौलिक अपेक्षाओं की पूर्ति में विषमता के बीजों का अंकुरण न हो।इसी प्रकार पुत्री और पुत्रवधू के बीच किसी प्रकार की विषमता नहीं होनी चाहिए। इस दिशा में समभाव का विकास पारिवारिक शान्ति और सौहार्द का मूल हो सकता है।

अणुव्रत- अणुव्रत मानव-जाति के लिए सुरक्षा-कवच है। विश्वभर में व्यापत अनैतिक शक्तियों से लोहा लेने के लिए समुत्सुक मानव इस कवच से कवचित होकर ही सुरक्षित रह सकता है। अन्यथा मानवीय गुणों का लोप करने वाले दुश्चक्र को रोकना संभव प्रतीत नहीं होता। पता नहीं यह नैतिकता-विहीन धर्म कब से चल रहा है और कब तक चलता रहेगा। एक दृष्टि से यह धर्म-वृक्ष के मूल पर प्रहार है। जिस दिन धर्म की मजबूत जड़ें प्रकम्पित हो जाएंगी, इस धरती पर मानवता की विनाशलीला का ऐसा दृश्य उपस्थित हो सकता है, जिसे देखने की क्षमता किसी भी आंख में नहीं रहेगी।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

आचार्य भिक्षु का लक्ष्य था आत्मशुद्धि

चैन्नई।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के आदि पुरुष आचार्य भिक्षु का 266वां अभिनिष्क्रमण दिवस ओएसिस पब्लिक स्कूल, कावेरिपक्कम में मुनि मोहजीतकुमार जी के सान्निध्य में मनाया गया।

इस अवसर पर अहोभाव प्रकट करते हुए मुनि मोहजीत कुमारजी ने कहा- आचार्य भिक्षु ने जैन जगत में आचार, विचार, सामाचारी की एकरूपता के लिए क्रान्तिकारी कदम उठाया। उनके जीवन का लक्ष्य था आत्मशुद्धि।

वे शुद्ध आचार की संकल्पना से अनुबन्धित विचार धारा को लेकर आगे बढ़े। इस क्रम में उन्हें अनेक प्रकार के संघर्षो का सामना करना पड़ा पर उनका आत्मबल और विचारबल इतना सशक्त था कि हर पक्ष में जीत हासिल हुई।

उन्होंने रामनवमी के दिन साधुता की अनेक कसौटियों को शुद्ध साधुत्व की अनुपालना के लिए मुखरित किया। उसी का सुपरिणाम है तेरापंथ धर्मसंघ की स्वस्थ परम्परा जो कि एक आचार्य के नेतृत्व में गतिमान है।

आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस पर मुनिश्री ने जप के साथ गीत का संगान किया। कार्यक्रम में चैन्नई तथा वालजापेठ के श्रावकगण विशेष रूप से उपस्थित थे।

संत की संतता व सज्जन की सज्जनता बनी रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

लाखणी।
25 अप्रैल, 2025

मर्यादा पुरुषोत्तम आचार्यश्री महाश्रमणजी लगभग 12.5 कि.मी. का विहार कर लाखणी स्थित श्री सरस्वती विद्यालय एवं आर्ट्स कॉलेज परिसर में पधारे। पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए पूज्यवर ने फरमाया — 'आदमी जीवन जीता है और यदि वह जीवन में धर्माचरण नहीं करता, सदाचार नहीं करता, बल्कि पापाचरण, दुराचार और भ्रष्टाचार करता है तो उसका मानव जीवन व्यर्थ हो जाता है। उसकी आगे की गति दुर्गति वाली हो सकती है और अंततः उसे पश्चाताप भी करना पड़ सकता है।

वह सोच सकता है — 'मुझे मानव जीवन मिला, पर मैंने क्या किया? मैंने धर्म नहीं किया, पाप किया। मैंने सुना है कि नरक भी होता है। अब मेरा क्या होगा? अब तो मौत मुझ पर मंडरा रही है — पता नहीं कब मुझे पकड़ ले! मुझे तो नरक में जाना पड़ेगा।'

ऐसा पश्चाताप उस व्यक्ति को करना पड़ सकता है जो धर्मविहीन और पापयुक्त जीवन जीता है। एक गला काटने वाला शत्रु भी उतना नुकसान नहीं करता, जितना खुद की दुरात्मा बनी हुई आत्मा कर देती है। दुरात्मा भव-भव में कष्ट दिलाने वाली होती है। इसलिए यह ज्ञातव्य है कि हमें जीवन में धर्म के मार्ग पर चलने का प्रयास करना चाहिए। यदि हम पाप और अधर्म के ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर चलने लगें, तो जीवन में कठिनाइयाँ आ सकती हैं। आत्मा ही मित्र है और आत्मा ही अमित्र है। दुष्प्रवृत्त आत्मा शत्रु है, सुप्रवृत्त आत्मा मित्र है।

घर में रहते हुए भी एक उम्र के बाद धर्म की प्रवृत्ति में अधिक समय लगाना चाहिए। पूज्यवर ने राजर्षि प्रसन्नचंद के प्रसंग से समझाया कि युद्ध पहले भावों में होता है। भावों के कारण व्यक्ति सातवीं नरक तक जा सकता है और भाव-शुद्धि होने पर मोक्ष भी प्राप्त कर सकता है।

एक बार साधुपन भावों में आ गया हो, तो भटकाव आ जाने पर भी वह व्यक्ति अंततः अपने घर (धर्मपथ) की ओर लौटता है। धर्म उपासनात्मक भी होता है और आचरणात्मक भी। कितने ही साधु-साध्वियाँ और श्रावक-श्राविकाएँ वर्षीतप की आराधना करते हैं। तप कर्म-निर्जरा का साधन है। मूलतः आत्मा की शुद्धि होनी चाहिए।

दुनिया में अनेक प्रकार के मनुष्य मिल सकते हैं — सज्जन भी और दुर्जन भी। हम अपनी सज्जनता को न छोड़ें। दुष्ट प्राणी अपनी दुष्टता को नहीं छोड़ता, तो संत अपनी संतता को क्यों छोड़ें? संत की संतता और सज्जन की सज्जनता बनी रहनी चाहिए। हमें अपनी आत्मा को यथासंभव मित्र बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए।

पूज्यवर के स्वागत में लाखणी जय केलवाणी मंडल की ओर से ट्रस्टी कीर्तिलाल शाह और विद्यालय की ओर से मावजीभाई पटेल ने अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त कीं।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आत्मा के शत्रुओं को परास्त करने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

थराद।
23 अप्रैल , 2025

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने वाव में नौ दिवसीय प्रवास संपन्न कर थराद में मंगल प्रवेश किया। करुणा-सागर पूज्यवर ने अमृतमय देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में कभी-कभी युद्ध की बात सामने आती है। प्राचीन काल में भी युद्ध हुए हैं। शास्त्रकारों ने भी युद्ध की बात कही है, किंतु बिल्कुल विपरीत संदर्भ में। सामान्यतः युद्ध का अर्थ होता है दूसरों से लड़ना, परंतु आगम में कहा गया है — स्वयं से युद्ध करो, आत्मा के शत्रुओं से युद्ध करो।

बाह्य युद्ध में शौर्य, निर्भीकता और आस्था की आवश्यकता होती है, मृत्यु का भय रहता है, फिर भी कुछ लोग देश की रक्षा के लिए तत्पर रहते हैं। वे कठिनाइयों की परवाह नहीं करते। यदि दूसरों से लड़ना कठिन है, तो स्वयं से लड़ना उससे कहीं अधिक कठिन और दुष्कर है। आत्मिक कषायों का दमन करना अत्यंत मुश्किल होता है। अरिहंत भगवान असली शत्रुओं — मोह, क्रोध, मान, माया, लोभ और काम — के संहारक होते हैं। इन अंतरंग शत्रुओं को परास्त करने वाला ही परमविजयी कहलाता है।

गुस्सा भी एक शत्रु है। साधना में रत व्यक्तियों के लिए क्रोध त्याज्य होता है, इसे उपशम द्वारा शांत करें। बार-बार उपशम के अभ्यास से गुस्से पर प्रहार करें। निरंतर पुरुषार्थ और प्रयास एक आध्यात्मिक चिकित्सा है। अहंकार भी एक शत्रु है। जाति, ज्ञान और रूप का अभिमान न करें। उत्तम कार्य करें, किंतु विनम्रता बनाए रखें। अहंकार को मार्दव से जीतें। माया को आर्जव से और लोभ को संतोष से परास्त करें। यही धर्म युद्ध है। आत्मा के शत्रुओं को पराजित या क्षीण करने का निरंतर प्रयास करें।

थराद पदार्पण के संदर्भ में फरमाते हुए आचार्य प्रवर ने कहा कि आज वाव से थराद आना हुआ है। कभी परमपूज्य गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी यहां पधारे थे, पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी भी यहां पधारे, तब मैं युवाचार्य रूप में साथ था। थराद के लोगों में खूब धार्मिक विकास होता रहे।

पूज्यवर के स्वागत में नरेश भाई परीख, विधि परीख, सिल्की परीख, आयुषी परीख, त्रिस्तुति संघ से वाघभाई बोहरा, थराद संघ से प्रकाश भाई माजनी, जयंती भाई वकील ने अपनी भावभिकव्यक्ति दी। परीख परिवार ने स्वागत गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

विशेष प्रज्ञा के धनी थे आचार्यश्री महाप्रज्ञजी : आचार्यश्री महाश्रमण

दशम अधिशास्ता की जीवनगाथा में दिखलाया ज्ञान और प्रज्ञा का वैभव

खोरडा।
24 अप्रैल, 2025

करुणा निधान आचार्यश्री महाश्रमणजी थराद से लगभग 12 किमी का विहार कर खोरडा गांव स्थित अंबाबेन प्रभुलाल त्रिवेदी आर्ट्स, कॉमर्स एण्ड सांइस कॉलेज परिसर में पधारे। परम पावन आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना में फरमाया कि तत्व का बोध करना और तत्व की समीक्षा करना एक अच्छी वृत्ति होती है। यथार्थ को हम समझने का प्रयास करें और समुचित रूप में समीक्षा करें। तटस्थ समालोचना की बुद्धि होती है और उसका उपयोग किया जाता है तो हमें यथार्थ का साक्षात्कार प्राप्त हो सकता है। स्वयं सत्य का अन्वेषण करें। अतीन्द्रिय ज्ञान हो जाए, फिर तो तर्क की बात भी नीचे रह जाती है। प्रज्ञा एक ऐसी उपलब्धि हो सकती है, जिसके द्वारा आदमी गहराई में जा सके। प्रज्ञा की स्थिति में राग-द्वेष की निरपेक्षता होती है। जहाँ पक्षपात है, वहाँ थोड़ी मलिनता हो जाती है। निष्पक्ष बुद्धि से समझना महानता की बात होती है। परम बात है कि यथार्थ को समझने-समझाने की चेष्टा हो। राग-द्वेष मुक्तता प्रज्ञा का श्रृंगार हो सकता है। आज वैशाख कृष्णा एकादशी है। हमारे परम वंदनीय आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की पंद्रहवीं वार्षिक तिथि है और सोलहवाँ महाप्रयाण दिवस है। आचार्यश्री नब्बेवें वर्ष में चल रहे थे। वे छोटे से गाँव टमकोर में जन्मे थे। गाँव भले छोटा हो पर व्यक्ति बड़ा बन सकता है। पूज्य कालूगणी से 11 वर्ष की अवस्था में सरदारशहर में दीक्षित हुए, मुनि तुलसी उनके संरक्षक थे। आठवें दशक में वे आचार्य बने थे, हमारे नाथ बन गए थे। मुनि अवस्था में ही वे हमारे धर्म संघ में एक प्रभावशाली संत के रूप में विख्यात थे। विद्वान संतों में उनका नाम आता था। साधना, वक्तृत्व, आचार-निष्ठा एक आयाम है तो वैदुष्य भी एक आयाम है। वे ज्ञान की दुनिया में जिए थे। उनमें ज्ञान और प्रज्ञा का वैभव था। विशेष बात यह थी कि अपने गुरु की विद्यमानता में वे आचार्य बन गए थे। यह विलक्षण घटना थी। पूज्य डालगणी भी इस मायने में विलक्षण आचार्य थे — वे पूर्वाचार्य द्वारा नियुक्त नहीं हुए थे। गुरुदेव तुलसी ने अपने जीवनकाल में आचार्य पद छोड़ दिया था, इसलिए वे भी विलक्षण आचार्य थे। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के साहित्य और प्रवचनों में वैदुष्य निखरता था। गंभीरता युक्त उनका भाषण होता था। उनकी भाषा काफी स्पष्ट, उच्चारण में शुद्धता और गले में मधुरता होती थी। उनके साहित्य में सच्चाई को निकटता से देखा जा सकता है। उनकी प्रज्ञा विकास को प्राप्त हो गयी थी। उनके साथी मुनिश्री बुद्धमलजी स्वामी भी विद्वान संत थे। प्रज्ञा का विकास होना एक उपलब्धि है। पूज्यप्रवर ने युवाचार्य महाप्रज्ञ जी और मुनि बुद्धमलजी के प्रसंगों के माध्यम से बताया कि विद्वता और तार्किकता हो तो किसी का बात का खंडन किया जा सकता है। मंडन श्रद्धा से भी किया जा सकता है और तर्क के आधार पर भी किया जा सकता है।

पूज्यवर ने आगे फरमाया - किसी प्रसंग पर एक बार मुनिश्री धर्मरुचिजी स्वामी ने कहा था – 'आपका जो आदेश है हमें वही करना है, और हमारा निवेदन है कि यह बात ऐसे हो जाए तो ठीक रहे। हमें करना वही है जो आप कहेंगे।' इसमें समर्पण और तार्किकता दोनों बातें आ जाती है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी विशेष प्रज्ञा के धनी थे। उनमें ज्ञान और प्रज्ञा का वैभव था। उनका प्रवचन भी साहित्य बन जाता था। गुरुदेव तुलसी में महाप्रज्ञ और महाप्रज्ञ में गुरुदेव तुलसी को देखा जा सकता था। दोनों लंबे काल तक गुरु-शिष्य के रूप में साथ रहे थे। पूज्यप्रवर ने गुरुदेव तुलसी और युवाचार्य महाप्रज्ञ जी के विभिन्न संस्मरणों की शब्द यात्रा करवाई। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने नवें दशक में भी यात्राएँ की थीं। सन् 2010 का चातुर्मास करने सरदारशहर पधारे और आज के दिन आचार्यश्री ने प्रवचन भी किया था। पर कुछ घंटों बाद सारी स्थिति बदल गई और महाप्रयाण हो गया। मुझ पर तो उनकी असीम कृपा रही थी। मैं उनको श्रद्धा से याद करता रहता हूँ। पूज्यवर ने स्वरचित गीत 'करें हम वन्दना सविनय गुरु महाप्रज्ञ मतिधर को' का सुमधुर संगान करवाया। आचार्यश्री ने मुख्यमुनिश्री को दो वर्ष पूर्व बहुश्रुत परिषद का संयोजक बनाए जाने के संदर्भ पावन प्रेरणा एवं आशीर्वचन प्रदान किया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि आचार्यश्री हमें पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के जीवन-प्रसंगों को चलचित्र की तरह खींचकर दिखा देते हैं। हम उनको श्रद्धा से वंदन कर श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। हम उनके जीवन के सूत्रों और रहस्यों को अपनाते चलें, आगे बढ़ते चलें। साध्वीवृंद ने समूह में सुमधुर गीत से भावांजलि अर्पित की। जयपुर से समागत नरेश मेहता ने भी भावांजलि दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के 16वें महाप्रयाण दिवस के अवसर पर परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा समुच्चारित गीत

करें हम वन्दना सविनय गुरु महाप्रज्ञ मतिधर को।
स्मरें हम भिक्षु शासन के दशम आचार्य धृतिधर को।।

मिली गुरु से अलंकृति जो बन गई नाम वह प्रेरक।
महाप्रज्ञा जगे हम में प्रणति प्रज्ञा दिवाकर को।।

साधना-आकाश में उज्ज्वल उगाया चांद प्रेक्षा का।
जगाया सुप्त चेतन को नमन निर्मल निशाकर को।।

दिया सन्देश जनता को अहिंसक चेतना का शुभ।
व्याप्त हो शांति जन-मन में, झुकाएं शीष प्रभुवर को।।

पढ़ें साहित्य गरिमामय, गढे इतिहास महिमामय।
चढ़ें सुविकास शिखरों पर प्राप्त हों परम अक्षर को।।

आज वैशाख महिने की कृष्ण एकादशी तिथिवर।
प्रणत एकादशम शास्ता नमें आराध्य गणिवर को।।

लय : मुझे है काम तुलसी से

अर्हम्

"शासनश्री" साध्वी मदनश्री जी का देवलोकगमन

जीवन परिचय

जन्म :	विक्रम संवत् 1991, चैत्र कृष्णा 12, रविवार
जन्म भूमि :	बीदासर
माता-पिता :	लक्ष्मीदेवी इन्द्रचंद जी बैद
वैराग्य भावना :	14 वर्ष की उम्र में
दीक्षा :	विक्रम संवत् 2009 में आचार्य श्री तुलसी के करकमलों से, सरदारशहर में।
यात्राएं :	बंगाल, बिहार, नेपाल, भूटान, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान आदि।
कंठस्थ ज्ञान :	दसवैकालिक, आवश्यक सूत्र, भक्तामर, कल्याण मंदिर, पंचसूत्रम्, कर्तव्य षडत्रिंशिका, कालू कौमुदी, नाममाला, रामायण, अग्नि परीक्षा, अंजना सती आदि आख्यान, पच्चीस बोल, तेरह द्वार, लघुदण्डक, बावन बोल, पाना की चर्चा आदि।
विशेष :	दीक्षा लेने के बाद आप साध्वी श्री रायकंवर जी (राजलदेसर) के साथ 44 वर्षों तक रहीं, उनके देवलोकगमन के बाद साध्वी श्री कानकुमारी जी के साथ 14 वर्ष रहीं, इसप्रकार एक ही सिंघाड़े में लगभग 58 वर्ष रहीं।
संथारा प्रत्याख्यान :	पांच दिन की तिविहार तपस्या में वैशाख कृष्णा 11 को आपकी संसारपक्षीय भांजी, बीदासर समाधिकेन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी मंजुयशा जी ने रात्रि करीब 1 बजे चौविहार संथारा का प्रत्याख्यान करवाया।
देवलोक गमन :	21 मिनट के अनशन के साथ 25 अप्रैल 2025, रात्रि 1:21 बजे।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।